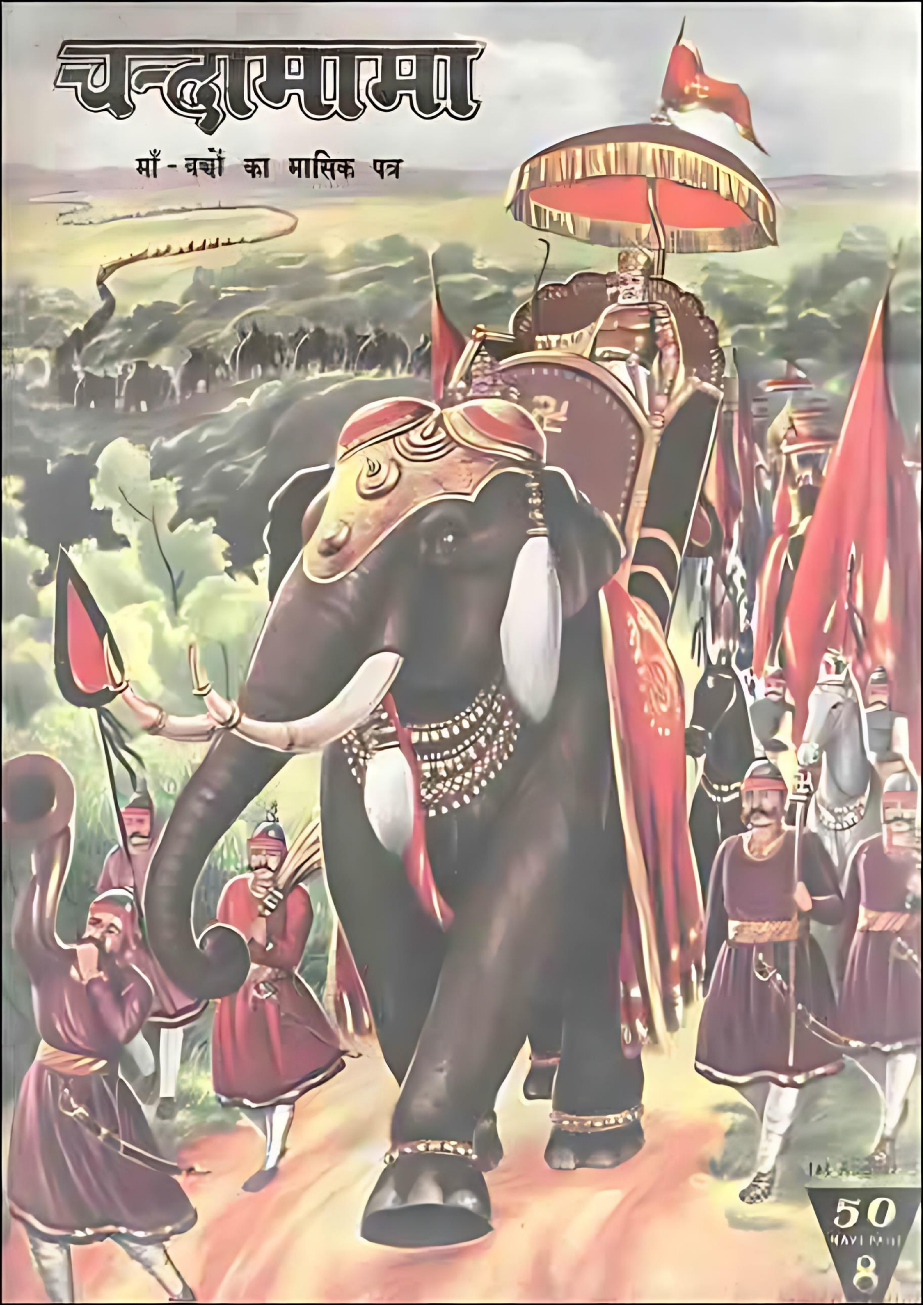
चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र



50

8



विन्ध्य पर्वत के प्रदेश में शम्भू नाम का एक गरीब नवयुवक रहा करता था। वह पहाड़ों में जैसे तैसे खेती करके अपनी बूढ़ी माँ का पालन पोषण किया करता था। उसे एक दिन सन्देह हुआ--उसकी उम्र में उसकी ही तरह कष्ट उठाकर यदि लोग धनी होते हैं तो वह वर्ष भर मेहनत करने पर भी क्यों नहीं अपनी और अपनी माँ का पेट भर पाता था?

उस इलाके में लोग अक्सर यह कहते सुने जाते थे। "यदि सन्देह हो तो अङ्गीरस महामुनि से पूछो।" यह कहा जाता था कि वह महामुनि नासिक के पास पहाड़ों में तपस्या किया करता था।

शम्भू ने अपने सन्देह के बारे में अङ्गीरस महामुनि से पूछने का निश्चय किया। यह निश्चय करते ही उसने अपनी माँ से कहा-"माँ, मैं नासिक जा रहा हूँ।" माँ ने बहुत मना किया पर वह बिना माने नासिक के लिए निकल पड़ा।

जाते जाते उसे एक निर्जन प्रान्त में एक झोपड़ी दिखाई दी। उसे भूख सता रही थी, इसलिए उसने झोपड़े के पास जाकर उसमें रहनेवाली बुढ़िया से पूछा-"क्यों नानी! थोड़ा खाने को दे सकोगी? दूर से चला आ रहा हूँ।" बुढ़िया ने उसे भोजन परोसकर पूछा "क्यों, बेटा, कहाँ जा रहे हो? किस काम पर जा रहे हो?"

"मैं अङ्गीरस महामुनि से यह मालूम करने जा रहा हूँ कि इतनी मेहनत करने पर भी क्यों नहीं मेरी गरीबी दूर होती है।" शम्भू ने कहा।

"तो, बेटा, उनसे एक और बात भी पूछना। मेरी पोती अट्ठारह वर्ष

की है। बड़ी सुन्दर है। परन्तु कभी बात नहीं करती। उसकी मूकता कैसे हटेगी जरा यह भी पूछते आना।" बुढ़िया ने कहा।

शम्भू इसके लिए मान गया और वहाँ से चल दिया। जाते जाते उसे एक शहर के बाहर एक घर दिखाई दिया। उसने वहाँ खड़े होकर घर के मालिक से कहा-"जी, बहुत दूर से चला आ रहा हूँ। भूख है। क्या थोड़ा खिला सकोगे?

घर के मालिक ने शम्भू को अपने साथ भोजन परोसवाया। फिर उसने पूछा-"क्यों बेटा, कहाँ जा रहे हो? किस काम पर जा रहे हो?"

"मैं अङ्गीरस महामुनि से यह पूछने जा रहा हूँ कि मेरे भरसक मेहनत करने पर भी मेरी गरीबी क्यों नहीं हटती।" शम्भू ने कहा।

"अच्छा, यह बात है तो एक हमारी बात भी पूछते आना। हमारे आङ्गन में एक बढ़िया नारङ्गी का पेड़ है। सालों हो गये पर उस पर फूल तक नहीं लगता है। अङ्गीरस महामुनि से पूछकर क्या इसका कारण जान सकोगे?" उस घर के मालिक ने पूछा।



शम्भू इसके लिए भी मान गया और वहाँ से चल पड़ा। जाते जाते एक घने जङ्गल में उसे एक आश्रम दिखाई दिया। उस आश्रम के मुनि के पास जाकर शम्भू ने पूछा- "स्वामी, भूख लग रही है। कुछ खाने को क्या दे सकेंगे?"

मुनि ने उससे पूछा-"तुम कहाँ जा रहे हो? किस काम पर जा रहे हो?"

"मैं अङ्गीरस महामुनि से यह पूछने जा रहा हूँ कि मेरे मेहनत करने पर भी मेरी गरीबी क्यों नहीं हटती है।" शम्भू ने कहा।

"तो उनसे जरा मेरा एक सन्देह भी पूछते आना। मैं बहुत समय से कुछ सिद्धियों के लिए तपस्या करता आया हूँ। पर मेरी तपस्या सफल होती नजर नहीं आती। क्या इसका कारण उनसे जान सकोगे?" मुनि ने कहा।

शम्भू मान गया। वह वहाँ से चलकर बहुत दिनों की यात्रा के बाद अङ्गीरस महामुनि के स्थान पर पहुँच सका। महामुनि उसको गौरवपूर्वक अपने आश्रम में ले गया।

"महात्मा, मैं चार सन्देहों के बारे में आपसे पूछने आया हूँ।" शम्भू ने कहा।



"मेरा, एक समय में तीन सन्देहों का निवारण करने का ही नियम है। तुम अपने सन्देहों में से एक को हटा दो, बाकी पूछो।" अङ्गीरस महामुनि ने कहा।

शम्मू ने कुछ देर सोचकर निर्णय किया कि सब सन्देहों में उसका अपना सन्देह ही सब से कम महत्वपूर्ण था। फिर उसने गूङ्गी लड़की, बिना फसल के नारङ्गी के पेड़ और असफल तपस्या वाले मुनि के बारे में पूछा। महामुनि ने उसके सन्देहों का निवारण भी किया। वापसी रास्ते में वह पहले पहल मुनि के आश्रम में पहुँचा।

मुनि ने उत्कण्ठापूर्वक पूछा-"बेटा! अङ्गीरस मुनि ने क्या बताया?"

"आपके सिर में कोई मणि है। आपकी तपस्या का सारा फल उसी को पहुँच जाता है। उसे उखाड़ फेंक देने से आपकी तपस्या सफल हो सकेगी, यह अङ्गीरस महामुनि ने बताया है।" शम्भू ने कहा।

मुनि ने जब आश्चर्य से अपनी जटाओ को टटोला तो उसके हाथ एक मणि लगी। उसे उठाकर शम्भू को देते हुए मुनि ने कहा-"तुम ही इसे रखो, बेटा, मैं सिद्धियाँ पा लूँगा।"



शम्भू मुनि से विदा लेकर गृहस्थी के पास गया। "अङ्गीरस महामुनि ने क्या बताया है बेटा?" उसने शम्भू से पूछा।

"आपके नारङ्गी के पेड़ के नीचे नौ सोने से भरे कलश हैं। उनको निकाल दीजिये तो पेड़ खूब बढ़ेगा, फल देगा।" शम्भू ने कहा।

उस गृहस्थी ने सोचा कि यह अच्छा न था कि उस रहस्य के बारे में कोई और जाने। इसलिये उसी रात शम्भू की सहायता से नारङ्गी के पेड़ के नीचे खोदा। वहाँ सचमुच नौ सोने से भरे कलश थे।

"बेटा! तुमने मेरा बहुत उपकार किया है। इनमें से तुम एक कलश ले जाओ।" उस गृहस्थी ने कहा।

मुनि की दी हुई मणि और गृहस्थी के दिये हुए कलश लेकर शम्भू उस झोंपड़े में पहुँचा जहाँ बुढ़िया रहा करती थी।

"क्यों बेटा! मेरी पोती के बारे में महामुनि अङ्गीरस से पूछा था? उन्होंने क्या कहा था?" बुढ़िया ने शम्भू से पूछा।

"पूछा था नानी। जब तेरी पोती को उसके योग्य वर दिखाई देगा तो



अपने आप उसकी मूकता चली जायेगी।" यही अङ्गीरस महामुनि ने बताया है। ठीक उसी समय बुढ़िया की पोती वहाँ आई।

शम्मू को देखते ही वह शर्म के कारण लाल हो गई। उसने बुढ़िया की ओर मुड़कर पूछा-"नानी, यह कौन हैं?"

बुढ़िया बड़ी चकित हुई। "तो बेटी, तू सचमुच बोलने लगी है? तब यही लड़का तेरा पति है। तुम दोनों की आज ही शादी करूँगी।"

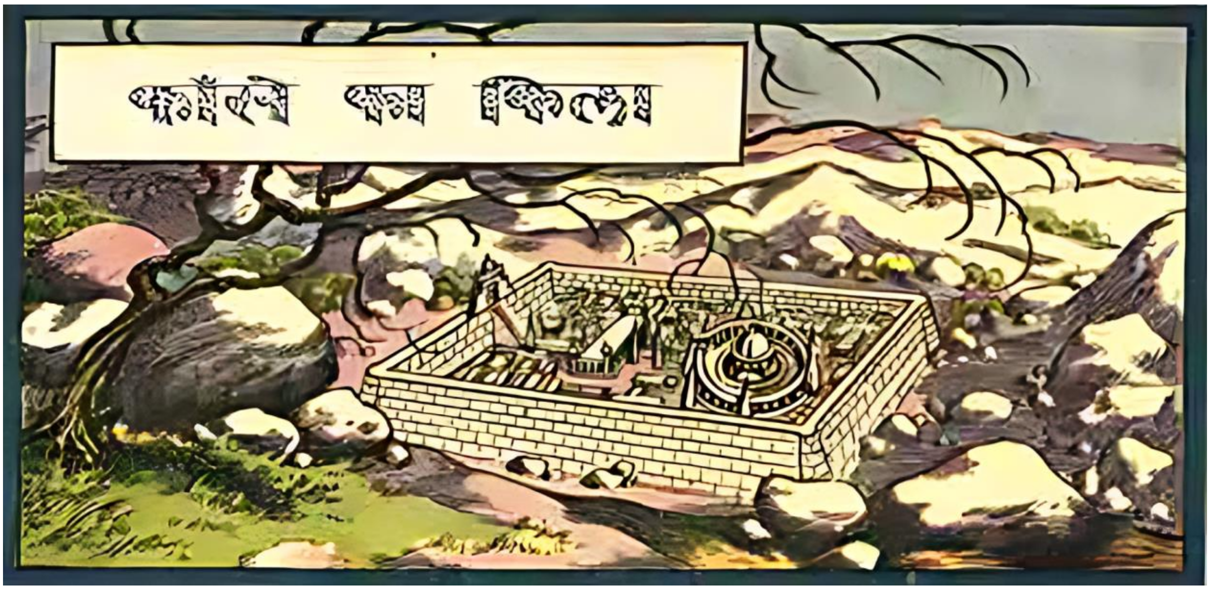
शम्भू उससे विवाह करके, उसे, सोने से भरे कलश, मणि को साथ लेकर अपने घर पहुँचा।

इस बीच, शम्भू के लिए रोती रोती उसकी माँ अन्धी हो गई थी। वह लड़के की आवाज़ सुनकर खुश हुई पर वह उसको देख न पाई। वह अपनी बहू को भी न देख पाई।

शम्भू ने मणि निकालकर अपनी माँ के आँखों के सामने रखते हुए पूछा-"क्यों माँ, यह तो दिखाई देती है?"

माँ ने उसको आँखों के और पास ले जाकर कहा-"बेटा, दिखाई नहीं दे रही है। वह कह ही रही थी कि वह मणि उसकी आँखों पर लगी। तुरन्त उसकी आँखें ठीक हो गई। शम्भू जान गया कि वह मणि, मुनि की तपस्या के कारण बहुत महिमावाली हो गई थी। उसकी सहायता के कारण उस पर कोई कष्ट न आये। सोने से वह अपनी जरूरतें पूरी करता रहा। वह पत्नी के साथ, सुखपूर्वक अपना परिवार चलाने लगा।





माहिष्मती नगर का राजा यशोवर्धन साठ साल तक निरन्तर राज्य करने के बाद बुढ़ा हो गया था। बीस वर्ष की उम्र में वह गद्दी पर बैठा था। इस लम्बे काल में उसने स्वयं कई युद्ध किये थे, राज्य की सीमाओं का विस्तार किया था। यद्यपि वह इतने बड़े राज्य का राजा था, पर बुढ़ापे में भी उसको मनः शान्ति न थी। वह सदा चिन्तित रहता। इसका कारण उसके लड़के ही थे।

यशोवर्धन के दो लड़के थे तपोवर्धन और गुणवर्धन। बड़े लड़के तपोवर्धन को सांसारिक वस्तुओं पर किञ्चित भी आसक्ति न थी। वह अपना समय धर्मशास्त्रों के पढ़ने में, पण्डितों से धर्म सम्बन्धी वाद विवाद करने में बिताता। हमेशा अध्ययनः करता रहता।

छोटे लड़के, गुणवर्धन का कुछ और ही जीने का तरीका था। वह भोग-विलास में अपना समय बिताता। उसके लिए धर्म और अधर्म में कोई भेद न था। झूठे, लुच्चे लफङ्गे उसके निकट मित्र थे।

यशोवर्धन ने अपना बाकी जीवन भगवान का ध्यान करते किसी आश्रम में बिताना चाहा। उसके राज्य छोड़ने से पहले यह आवश्यक था कि कोई ऐसा व्यक्ति मिले जो राज्य भार उठा सके। नहीं तो देश में अराजकता पैदा



हो जाती। देश के लिए यह हितकर न था कि उसका बड़ा लड़का, जिसको ऐहिक वस्तुओं से वैराम्य सा था, उसके बाद राजा बने। गुणवर्धन ही एक रह गया था। उसको उत्तराधिकारी बनाने में भी कई कठिनाइयाँ थीं।

गुणवर्धन के कुकृत्यों के बारे में यशोवर्धन ने सुन रखा था। उसने उसको कई चार ड़ाँटा डपटा भी था। यशोवर्धन ने यह भी सोचा कि हर किसी का बीस वर्ष की उम्र में उसी तरह का व्यवहार रहता है। यशोवर्धन का विचार था कि यदि राज्य का भार उसके कन्धों पर डाल दिया गया तो वह स्वयं ही सुधर जायेगा। जिम्मेवारी ही इस तरह की बीमारियों की अच्छी दवा है।

परन्तु इस बारे में जब उसने मन्त्री, सामन्तों से सलाह मशवरा किया तो उन्होंने गुणवर्धन के राजा बनाये जाने पर आपत्ति की। उन्होंने सन्देह प्रकट किया कि बड़े लड़के के होते हुये छोटे लड़के को यदि गद्दी पर बिठाया गया तो प्रजा में निस्सन्देह असन्तोष फैलेगा।..

उन्होंने सलाह दी कि धार्मिक प्रकृति का तपोवर्धन ही राजा होने के योग्य था। और सभी का उसी में भला था। राज्य की परम्परा भी वही थी।

यह सलाह यशोवर्धन को नहीं जँची। उसने सोचा यदि बड़ा लड़का, जिसमें क्षत्रिय गुणों का अभाव था, राजा हो गया तो वह मन्त्रियों के हाथ में कठपुतली बन जायेगा, उनकी सुनेगा। यह उसे बिल्कुल पसन्द न था।

उसे यह भी डर था कि यह राज्य, जिसे उसने इतनी कठिनाई से पाया था, उसके वंशजों के हाथ में न रहकर परायों के हाथ में चला जायेगा।

इन भय और सन्देहों के बाद आखिर यशोवर्धन ने एक निश्चय किया। वह निश्चय यों था- अपने राज्य के सामन्तों व बड़े लोगों की एक सभा बुलाना, और उस सभा में अपनी इच्छा प्रकट करना और गुणवर्धन को राजा स्वीकार करने के लिए प्रेरित करना।



कुछ दिनों बाद, राज्य के सामन्त व बड़े लोगों की सभा बुलाई गई। सभा में यशोवर्धन ने अपने विचार व्यक्त किये। यही नहीं बड़े लड़के तपोवर्धन ने भी इस बात का समर्थन किया कि पिता के बाद गुणवर्धन का ही पट्टाभिषेक हो। दुर्गुणी गुणवर्धन का राजा होना सभा में किसी को पसन्द न था। परन्तु यह राजा से कहने के लिए हर कोई डरा। उस समय वीरपुर के सामन्त सूर्यवर्मा ने उठकर गुणवर्धन के दुष्ट कार्यों के बारे में बताकर कहा कि वह राजा होने के बिल्कुल अयोग्य था।

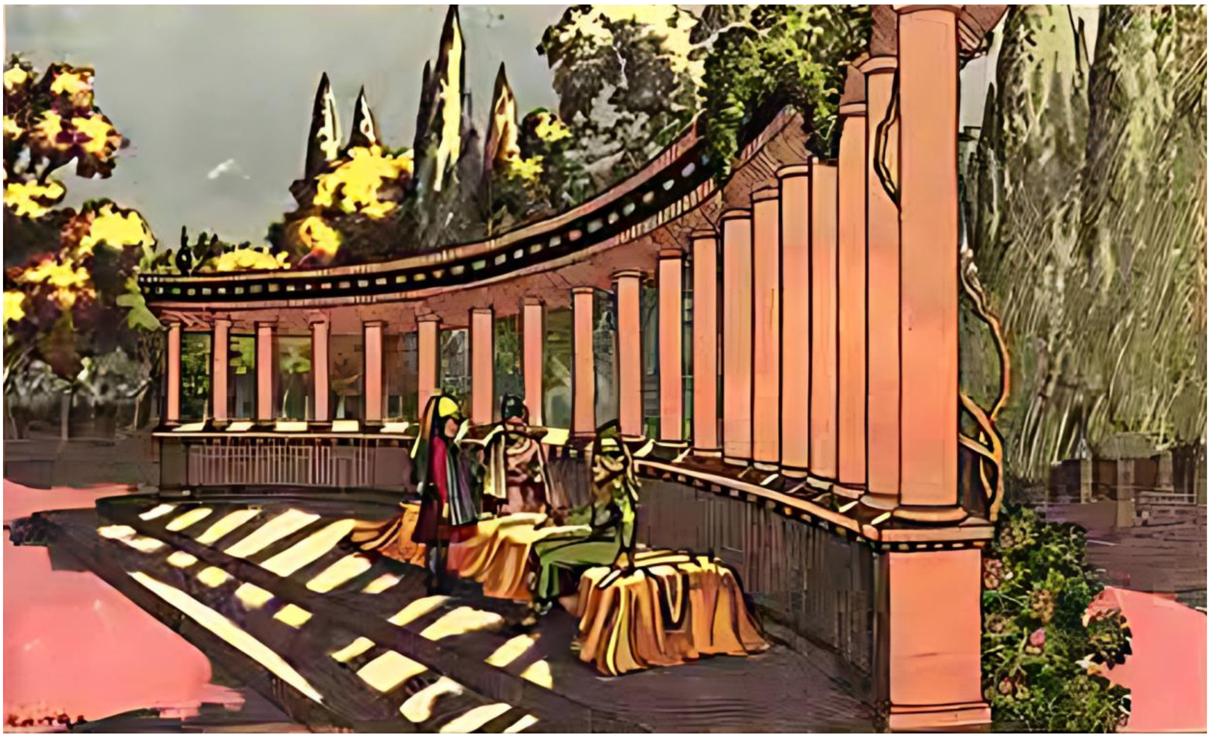
सभा में करतल ध्वनि होने लगी। सूर्यवर्मा के मत का समर्थन करते हुये कई सामन्त बोले। कई ने यह भी निवेदन किया कि कुछ और काल तक यशोवर्धन को ही राज्य करना चाहिये और इस काल में तपोवर्धन में राज्य कार्य के प्रति आसक्ति पैदा करनी चाहिये।

यशोवर्धन कुछ निश्चय न कर पाया। अगर सामन्तों की बात की परवाह न करके छोटे लड़के को राजा बनाता है तो देश में विद्रोह हो सकता है। सामन्तों में सबसे अधिक शक्तिशाली सूर्यवर्मा ही इस विद्रोह का स्वयं नेतृत्व करेगा। उसने सोचा कि यदि राज्य में शान्ति रखनी है तो उसके लिए एक ही मार्ग है, वह यह कि फिलहाल राज्य परित्याग करने का निश्चय

वह स्थगित कर दे। उसने वही किया। लोगों में आनन्द और उत्साह फैल गया। सभा के समाप्त होते ही यशोवर्धन मन्त्री को साथ लेकर अपने उद्यान में गया। मन्त्री ने तब सलाह दी कि सूर्यवर्मा से एकान्त में बातचीत करना अच्छा था। मन्त्री का ख्याल था कि सामन्तों में सबसे अधिक प्रभावशाली सूर्यवर्मा को अपने साथ कर लिया गया तो सब ठीक हो जायेगा। उसका विरोध अच्छा न था।

सूर्यवर्मा को उद्यान में बुलाया गया। यशोवर्धन ने गौरव पूर्वक अपने बगल में उसको आसन देकर कहा-"वर्मा! यद्यपि मैं तुम्हारे विचारों से सहमत नहीं हूँ; पर सभा में तुमने जो साहस, निर्भयता दिखाई, मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ। मैं जानता हूँ वीरपुर के सामन्त हमेशा राजभक्त रहे हैं। गुणवर्धन अभी छोटा है। मेरा विचार है अगर उसे तुम जैसे अनुभवी सामन्तों का समर्थन मिला तो वह भी एक उत्तम परिपालक हो सकता है। तुम जैसे सामन्तों पर बहुत कुछ निर्भर है।

"महाराज, धर्म अधर्म का ज्ञाता, साधु स्वभाव के युवराज तपोवर्धन के उपस्थित



रहते, प्रजा की दृष्टि में किसी और को राज्य सौंपा जाना न्याय नहीं कहलायेगा बल्कि यह बिल्कुल अन्याय समझा जायेगा।" सूर्यवर्मा ने कहा।

"तपोवर्धन तो विरक्त-सा है। दुनियाँ की चीज़ों से उसका कोई वास्ता नहीं। अगर वह राजा बना तो देश में अराजकता फैलेगी।" यशोवर्धन ने सोचते हुए धीमे धीमे कहा।

"उनको संसारिक वस्तुओं की ओर आकर्षित करना कोई खास बड़ी बात नहीं है। अगर उनको बड़े लड़के की जिम्मेवारियों के बारे में बताया गया तो वे राज्यभार स्वीकार करेंगे।" सूर्यवर्मा ने कहा।

यशोवर्धन ने अपने मन्त्री की ओर देखा। मन्त्री ने सूर्यवर्मा के विचार से सहमत होते हुये सिर हिलाया।

"यही बात है तो तपोवर्धन को तुम्हारे संरक्षण में एक साल के लिए रखूँगा। क्या तुम इस समय में उसको सांसारिक वस्तुओं के प्रति आकर्षित करके राजा होने के योग्य कर सकोगे?" यशोवर्धन ने सिर हिलाते हुए पूछा।





सूर्यवर्मा इसके लिए मान गया। उसने कहा कि वह घर जाकर शासन सम्बन्धी कार्यों को अपने लड़के चन्द्रवर्मा को सौंपकर कुछ ही दिनों में राजधानी वापस आ जायेगा। इस पर यशोवर्धन को कोई आपत्ति न थी। वह मान गया।

सूर्यवर्मा, यशोवर्धन से विदा लेकर अपने ठहरने की जगह गया। वह उसी दिन राजधानी छोड़कर वीरपुर जाने की तैयारी करने लगा।

सूर्यवर्मा इधर घर जाने की तैयारी कर रहा था और उधर रास्ते में उसको रोककर उसे मारने की तैयारियाँ हो रही थीं। उन लोगों का सरदार सर्पकेतु नाम का एक सामन्त था। उसके राज्य की सीमायें बीरपुर की सीमाओं से मिलती थीं। वह कई वर्षों से वीरपुर को हथियाने की कोशिश कर रहा था; पर सफल न हो पाया था। उसका ख्याल था कि यशोवर्धन के छोटे लड़के गुणवर्धन को अपनी तरफ करने से उसका काम शीघ्र ही सफल हो सकता था।

जब गुणवर्धन को मालूम हुआ कि पिता की इच्छा का विरोध करनेवाला वीरपुर का सामन्त सूर्यवर्मा था तो वह गुस्से से आगबबूला हो उठा। उसका अनुमान था कि उसका विरोध देखकर ही और सामन्त भी विरोध करने लगे थे। परन्तु वह अकेला सूर्यवर्मा का मुकाबला नहीं कर सकता था। उसके मित्रों में भी कोई उतना साहसी व बहादुर न था। यह वह भलीभाँति जानता था।

गुणवर्धन सोच ही रहा था कि सूर्यवर्मा से कैसे बदला लिया जाय कि सर्पकेतु उसे देखने आया। दोनों ने एक दूसरे के मन की बात जान ली। सर्पकेतु ने सलाह

दी कि वीरपुर जाते समय सूर्यवर्मा के साथ दो चार अङ्गरक्षक ही होंगे, इसलिए उसे पहाड़ों में यकायक मार देना आसान था। कोई खास मुकाबला न होगा। उसने यह भी कहा कि उसके लिए जरूरी आदमी उसके पास थे।

"यदि आपने यह काम सफलतापूर्वक किया तो किसी दिन आपकी सहायता कर सकूँगा। यह सच है कि जब सूर्यवर्मा न रहेगा तब में राजा बन सकूँगा। यह आप भी जानते हैं।" गुणवर्धन ने कहा।

"इसमें कोई सन्देह नहीं है। क्योंकि मैं यह जानता था कि ऐसा ही होगा, इसलिए मैंने पहले ही सूर्यवर्मा के प्रदेश को हड़पने के लिए चाल सोच रखी है। उसकी मृत्यु की खबर पाते ही मेरी सेना उसके प्रदेश पर आक्रमण कर देगी। सूर्यवर्मा का लड़का चन्द्रवर्मा उसका मुक़ाबला न कर सकेगा। मेरी सेना मामूली लोगों के कपड़े पहनकर वीरपुर के किले में घुस जायेगी। हमें यशोवर्धन महाराजा को यह दिखाना है कि यह आक्रमण नहीं किन्तु प्रजा का एक



क्रूर सामन्त के विरुद्ध विद्रोह है। हमें इस बात का ख्याल रखना होगा।" सर्पकेतु ने कहा।

"इसके लिए जो मदद जरूरी है, में दूँगा। मैं पिताजी से भी मौका निकालकर कहूँगा कि सूर्यवर्मा अत्याचारी है। अगर उसकी हत्या उसके प्रदेश में की गई तो वह इस बात को और भी सिद्ध करेगी।" गुणवर्धन ने कहा।

गुणवर्धन की बातों से सर्पकेतु का उत्साह और भी बढ़ गया। जिस दिन बलवान सूर्यवर्मा का विरोध समाप्त हो जायेगा उस दिन गुणवर्धन को माहिष्मती

नगर का राजा बनाना कोई कठिन काम न था। वह न केवल वीरपुर के प्रदेश को हस्तगत ही कर लेगा अपितु माहिष्मती नगर में भी काफी प्रभाव प्राप्त कर सकेगा। वह सोच रहा था।

सूर्यवर्मा की हत्या की साजिश इस तरह करके सर्पकेतु जल्दी राजधानी छोड़कर अपने साथियों को लेकर वीरपुर के सरहद पर सूर्यवर्मा के आने की उत्कण्ठापूर्वक प्रतीक्षा करने लगा।

सूर्यवर्मा को इस साजिश के बारे में कुछ न मालूम था। वह उसी दिन अपने नौकरों व सेवकों को लेकर अपने घर के लिए निकल पड़ा। बीच रास्ते में उसने पड़ाव किया और फिर सवेरे उठकर चल दिया।

उस दिन सूर्यास्त के समय सूर्यवर्मा अपने प्रदेश की सीमा पर पहुँच गया।

उस इलाके में पहाड़ और जङ्गल ही जङ्गल थे। सूर्यवर्मा को तो किसी खतरे का सन्देह था ही नहीं, इसलिए वह अपने घोड़े को आगे ले जाता, युवराज के विषय में उसने जो जिम्मेवारी ली थी, उसके बारे में सोचता जाता था।

यकायक कहीं आहट सुनाई दी। सूर्यवर्मा ने आहट सुनते ही घोड़ा रोककर जब पीछे मुड़कर देखा तो पत्थरों के पीछे से, पेड़ों के पीछे से मामूली कपड़े पहने, जोर से चिल्लाते हुए कई घुड़ सवारों ने उसपर हमला किया। सूर्यवर्मा भी तलवार निकाल कर शत्रुओं का सामना करने लगा। पर तब तक वह अपने साथियों से अलग कर दिया गया था। दस पन्द्रह सशस्त्र व्यक्तियों ने एक साथ उस पर आक्रमण किया।

(क्रमशः)





प्रेमोपासक

फिर एक बार विक्रमार्क पेड़ के पास गया। शव को उतारकर, कन्धे पर डाल पहले की तरह श्मशान की ओर चुपचाप चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा- "राजन्! इस आधी रात के समय जब तुम मोटे मोटे गद्दों पर आराम से सो सकते थे, इस तरह कष्ट तुम्हें झेलते देख मेरा हृदय पिघल रहा है। प्रायः जो प्रेम करते हैं, वे ही हर तरह के कष्टों का जान बूझकर सामना करते हैं। यह दिखाने के लिए तुझे नन्द सुनन्द की कहानी सुनाता हूँ सुनो।" उसने यह कथा सुनाई।

कभी शरभ देश और साल्व देश में भयङ्कर युद्ध हुआ। उसमें न केवल साल्वदेश पूरी तरह हार ही गया, परन्तु



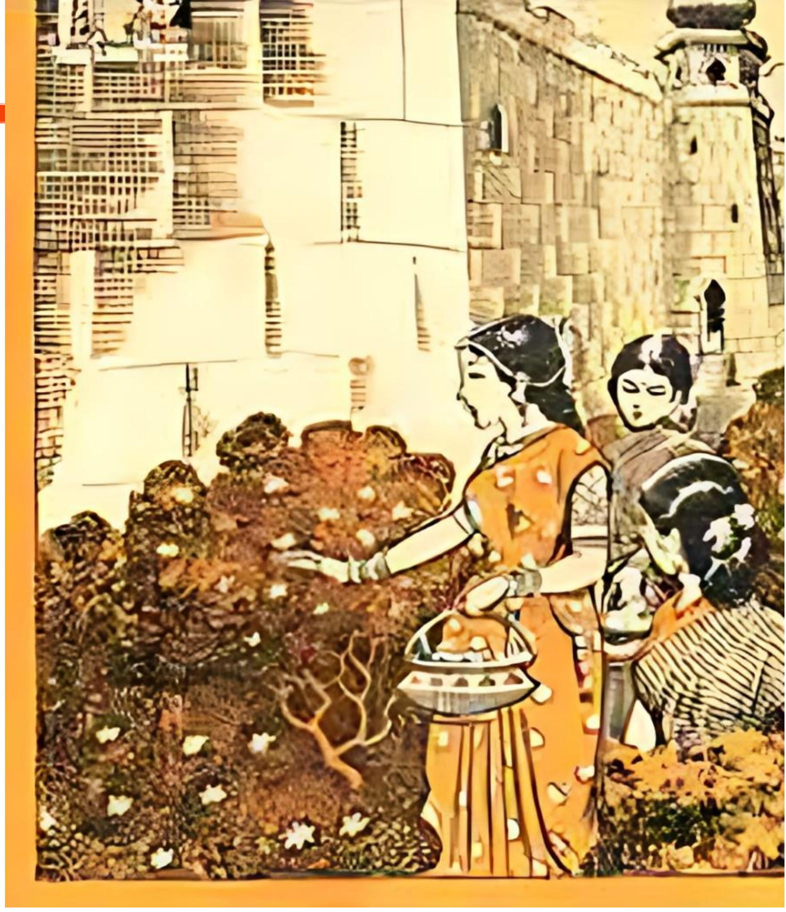
साल्ब राजा के वंश का भी सर्वनाश हो गया। शरभ देश के राजा सुनत्सेन ने युद्ध के समाप्त होते ही साल्व राजधानी को अपने सैनिकों से लुटवा दिया। कई सैनिकों ने दबे हुये खजानों के लिए कई मकान गिरा दिये। कई ने रणक्षेत्र में मरे हुए सैनिकों की चीजें लीं। उनको दो व्यक्ति ऐसे भी मिले जिनमें प्राण कहीं अटका आहें भर रहा था। सुनत्सेन के सैनिक उनको अपने राजा के खेमे पर ले गये।

वे दोनों ही नन्द और सुनन्द थे। वे साल्व वंश से सम्बन्धित थे। वे सगे भाई तो न थे किन्तु निकट बन्धु थे। थोड़ी बहुत चिकित्सा, शुश्रूषा के अनन्तर वे ठीक हो गये। क्योंकि वे उसके परम शत्रु थे, इसलिए सुनत्सेन उनको शरभ नगर ले गया और वहाँ उसने उनको आजीवन कारावास का दण्ड दिया। जिनको युद्धक्षेत्र में वीरगति मिलनी चाहिए थी, वे कारागार के नरक में सड़ने लगे। उनका जीते जी उस कारगार से निकलना असम्भव-सा था।

सुनत्सेन की मनोरमा नाम की एक बहन थी। वह सयानी हो गई थी। पर चूँकि उसके योग्य वर न मिला था इसलिए भाई ने उसका विवाह न किया था। मनोरमा का सौन्दर्य अप्सराओं के सौन्दर्य को भी मात करता था। वह सुन्दर ही नहीं बहुत बुद्धिमति भी थी। वसन्त में, बगीचे में जाकर चुन चुनकर अपने मन पसन्द फूलों को तोड़कर लाने की उसकी आदत थी। वह एक दिन बगीचे में गई।

वह बगीचा कारागार के एक तरफ था। नन्द, सुनन्द की जगह से उद्यान का वह भाग दिखाई देता था। खिड़की के

पास खड़ा जब अन्यमनस्क-सा नन्द बाहर देख रहा था, तब मनोरमा उसे यकायक दिखाई दी।



"भाई, वह वनदेवी है या स्त्री? इतनी सुन्दर स्त्री को मैने कहीं भी नहीं देखा है। मैं इसके अतिरिक्त किसी और से प्रेम न कर सकूँगा।" नन्द ने कम्पती हुई आवाज़ में कहा।

सुनन्द ने भी खिड़की में से मनोरमा को देखा और वह भी प्रेम की अग्नि में यकायक तपने लगा। उनके देखते देखते ही मनोरमा आँखों से ओझल हो गई। नन्द और सुनन्द एक दूसरे को देखने लगे। "बुरे में भी भला होता है। सोचा था कि किस्मत खराब थी इसलिए इस कैद में हम आ फँसे थे। परन्तु कैद में हैं, इसी कारण तो इस सुन्दरी से प्रेम करने का अवकाश मिला। यदि वह रोज़ दिखाई दे तो सौ साल भी सन्तोष से इस कैद में रहूँगा।" सुनन्द ने कहा।

यह सुन नन्द को उस पर गुस्सा आया। "मैं जिस स्त्री से प्रेम कर रहा हूँ उससे तुम कैसे प्रेम कर सकते हो? क्या तुम इतना भी नहीं जानते? मैं तुम से बड़ा हूँ। उसे पहले मैंने देखा है। देखते ही प्रेम किया है। मेरे प्रेम को सफल बनाने की कोशिश करना तो अलग तुम मुझसे ही होड़ कर रहे हो और उस स्त्री से ही प्रेम कर रहे हो, जिससे मैं प्रेम कर रहा हूँ। क्यों?" नन्द ने सुनन्द को बुरा भला कहा।

"आत्मरक्षा और प्रेम में कोई किसी का नहीं होता। मेरी इच्छा, में प्रेम करता हूँ। तेरे बड़प्पन से मुझे क्या?" सुनन्द ने कहा।

दोनों में बहस हुई। तू तू मैं मैं हुई। दोनों आपस में जानी दुश्मन हो गये।

प्रेम ने उन दोनों के बीच दीवार खड़ी कर दी। वे यह भी न जानते थे कि वे किस स्त्री से प्रेम कर रहे थे। उससे विवाह करने का अवकाश दोनों में से किसी को भी न था। पर यह दोनों को ही न मालूम था।

मनोरमा रोज़ बगीचे में आती और उनको दिखाई देती। दोनों जब तक उसे देखते रहते तो ऐसा अनुभव करते जैसे कि वे स्वर्ग में हों और जब वह उनको न दिखाई देती तो दोनों आपस में जोर शोर से लड़ना शुरु कर देते।

इस तरह कई मास गुज़र गये। एक दिन मगध देश का राजा सुनत्सेन को देखने के लिए आया। वे दोनों माता पक्ष में निकट बन्धु थे। सुनत्सेन ने मगध देश के राजा को बताया कि उसने कैसे साल्व देश की राजधानी को मिट्टी में मिला दिया था, कैसे वह शत्रु परिवार के नन्द और सुनन्द को पकड़ लाया था और कैसे उनको कारागार में डाल दिया था।

मगध राजा ने आश्चर्य से पूछा- "सुनन्द को कैद में डाल रखा है? हम



दोनों एक ही गुरु के शिष्य हैं। आज मैंने बहुत ही दुखद वार्ता सुनी है।"

सुनत्सेन ने कुछ देर सोचकर कहा- "अगर सुनन्द का कैद में रहना तुझे पसन्द न हो तो उसे आज ही छोड़ दूँगा।" उसने तुरन्त उसके छुटकारे के लिए आज्ञा दे दी। फिर उसने सुनन्द को बुलाकर उससे कहा- "तेरा भाग्य अच्छा है। इसलिए तुझे छोड़ रहा हूँ। परन्तु तुम मेरे परम शत्रु हो, इसलिए तुम्हें मेरा राज्य छोड़ने के लिए एक दिन का समय देता हूँ। चले जाओ। इसके बाद यदि तुम मेरे राज्य में दिखाई दिये तो तुम्हारा सिर तुरत कटवा दूँगा।"

सुनन्द उसी दिन अपने देश चला गया। परन्तु उसे इसका तनिक भी आनन्द न था कि वह जेल से मुक्त कर दिया गया था। साल्व देश में कहीं भी कोई रौनक न थी। जहाँ कभी राजधानी थी वहाँ अब खण्डहर ही खण्डहर थे। पहले के परिचितों ने उसे बुलाकर रहने के लिए घर दिया। परन्तु उसे किसी प्रकार की कोई प्रसन्नता न थी। वह दुखी था।

"यह स्वतन्त्रता किस काम की? अगर कारावास में होता तो रोज अपनी प्रेयसी





को देखकर खुश हो सकता था। अब मैं उसे आँखों देख भी नहीं सकता। उसके लिए तड़प-तड़पकर मरने के सिवाय मेरे भाग्य में कुछ नहीं है। मुझसे नन्द ही कितने गुना भाग्यशाली है। वह रोज उसे देखकर ही सन्तुष्ट हो सकता है।" सुनन्द सोचा करता।

उधर नन्द भी हर रोज यों सोचा करता-"सुनन्द कोई जादू करके कैद से छूटकर चला गया है। अब वह उस स्त्री से विवाह कर सकता है और अगर कोई विवाह करने का रास्ता न हो तो वह अपने देश वापस जा सकता है, बड़ी सेना जमा कर सकता है। सुनत्सेन को हराकर उस स्त्री से विवाह कर सकता है और मैं लाचार यहाँ पड़ा हूँ। कुछ भी नहीं कर पाता हूँ।"

एक वर्ष बीत गया। सुनन्द का हृदय दिन प्रति दिन भारी होता जाता था। हल्का न होता था। उसे अपनी प्रेयसी को देखे एक साल हो गया था। इस बीच जाने कितनी बार नन्द उसे देखकर खुश हुआ होगा। इसी फिक्र में सुनन्द ने खाना-पीना, सोना भी छोड़ दिया।

इस तरह जीने से तो यही अच्छा है कि उसे देखता देखता मर जाऊँ। मैं शरभ देश जाऊँगा।" सुनन्द ने निश्चय किया।

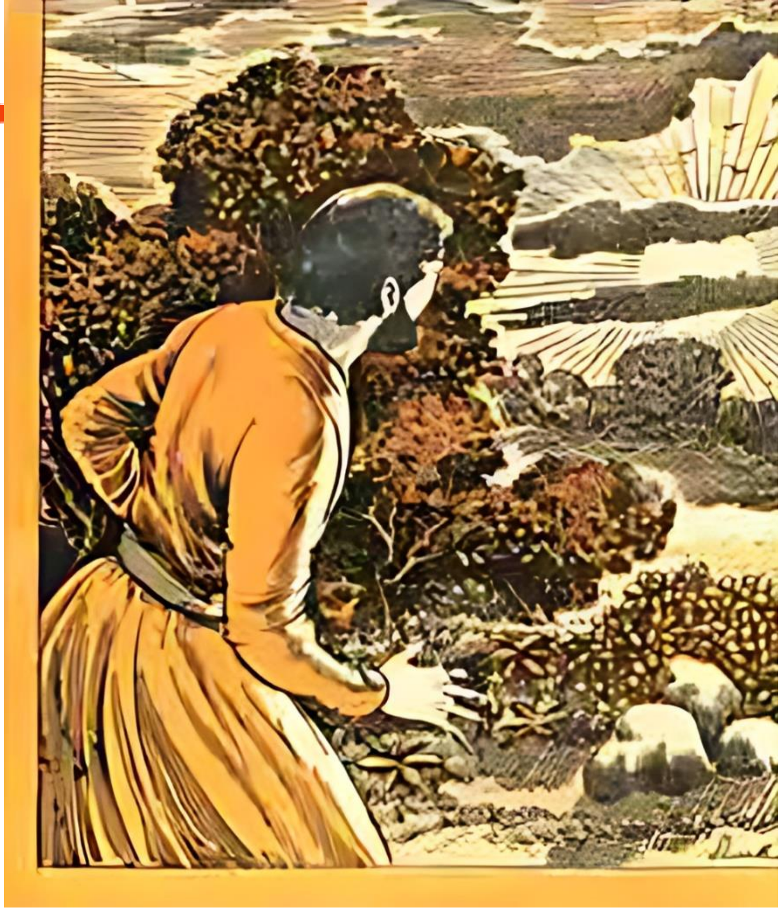
उसने आइने में देखा। पिछले एक वर्ष में उसका मुँह इतना बदल गया था कि यदि वह शरभ देश जाता भी तो उसे कोई पहचान न सकता था। इसलिए सुनन्द ने अपना नाम सोमपाल रखा और शरभ देश के लिए निकल पड़ा।

जैसा उसका विचार था, उसको किसी ने नहीं पहचाना। राजमहल में उसको आसानी से काम मिल गया। वह नौजवान

था, बलवान था, इसलिए उसने सब तरह के काम बड़े उत्साह से किये। परन्तु यह जानकर कि वह बुद्धिमान है, जिम्मेवारी ले सकता है, अधिकारियों ने कुछ बड़े काम दिये और उसको बड़ी नौकरी दी। इस नौकरी में उसकी आमदनी बढ़ी ही, उसका प्रभाव भी बढ़ा। क्योंकि वह औरों की तरह राजा का रुपया हजम न करना चाहता था इसलिए वह सबके लिए अच्छा हो गया।

वह सिर्फ अपनी प्रेयसी को देखना चाहता था। उसे तब मालूम हुआ कि वह राजा की सगी बहन ही थी। उसे रोज देखने का और उससे बातचीत करने का भी मौका मिल जाता था। वह सचमुच स्वर्ग में था।

एक दिन अचानक रात को नन्द कैद से भाग निकला। कैदखाने के एक सिपाही ने भागने में उसकी सहायता की। परन्तु वह नगर से बहुत दूर न गया था कि सवेरा हो गया। दिन में लोग आते-जाते थे। कोई भी उसे देखकर पहचान सकता था। अगर वह फिर पकड़ा गया तो अवश्य ही उसे मार दिया



जायेगा। किसी तरह वह बचकर साल्व देश पहुँच गया तो सेना जमा करके वह शरभ देश पर हमला कर सकता था, सुनत्सेन से युद्ध कर सकता था। यदि वह युद्ध में जीत गया तो उसको उसकी प्रेयसी मिल जायेगी, और यदि मर जायेगा तो उसके कष्ट समाप्त हो जायेंगे। उससे पहले छूटे हुए सुनन्द को यह काम करना चाहिए था। अब यह काम मैं करूँगा।

यह सोचकर दिन भर पेड़-पौधों के पीछे छुपे रहकर, अन्धेरा होते ही उसने चलने का निश्चय किया। शरभ नगर के बाहर, जङ्गल में पौधे के पीछे छुप गया।



कुछ देर बाद, भाग्यवश सुनन्द, उस तरफ जङ्गल में टहलते हुए आया। मनुष्य की आहट सुन, पौधे के पीछे से सुनन्द को पहचान कर, बाहर आकर उसने पूछा-"तू यहाँ क्यों है?"

सुनन्द ने नन्द को बता दिया कि नाम बदलकर राजा के यहाँ वह काम कर रहा था। नन्द ने भी बताया कि वह कैसे जेल से भागकर आया था और कैसे मनोरमा से विवाह करने के लिए युद्ध करने की सोच रहा था। "अब तू सचमुच मेरा दुश्मन है। क्योंकि तू ही मेरे रास्ते में काँटा है इसलिए हम दोनों का जीना सम्भव नहीं है। आओ, तय कर लें कि हम दोनों में से किसको रहना चाहिए।" उसने कहा।

"न तेरे पास कोई हथियार है, न मेरे पास ही। हम कैसे युद्ध कर सकते हैं? अगर तुम कल तक यहाँ रहे तो मैं दो तलवार ले आऊँगा।" सुनन्द ने कहा।

नन्द मान गया। उस दिन वह कहीं न गया। वहीं पौधों के पीछे छुपा रहा। अगले दिन सवेरे सुनन्द दो तलवार लेकर वहाँ आया। उन दोनों में भयङ्कर युद्ध प्रारम्भ हुआ।

उसी दिन सुनत्सेन, अपनी पत्नी और बहन को लेकर, रथ पर चढ़ हरिणों का शिकार खेलने निकला। रथ के जङ्गल में घुसते ही, उन्हें तलवारों की आवाज़ सुनाई दी। राजा ने जाकर देखा तो नन्द और सुनन्द आपस में लड़ रहे थे।

"ठहरो! जो कोई तलवार उठायेगा उसे मार दूँगा।" सुनत्सेन यह कहकर उनके पास गया। फिर उसने पूछा-"तुम कौन हो?"

नन्द ने अपनी और सुनन्द की कहानी सुनाई। उसने कुछ न छुपाया। राजा को वह

सुनकर आश्चर्य हुआ। उसे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उसकी बहन के लिए दोनों अपने प्राणों की बाजी लगा रहे थे। सुनन्द कैद से मुक्त होने के बाद भी केवल मनोरमा को देखने के लिए अपने प्राणों की परवाह न कर शरभ देश वापिस आया था।

नन्द उससे अपने प्रेम का बँटवारा न करना चाहता था। इसलिए वह तय कर लेना चाहता था कि वह मरेगा नहीं तो उसे मारेगा। दोनों का प्रेम आश्चर्यजनक था।

सुनत्सेन ने दोनों को क्षमा कर दिया। वह चाहता था कि दोनों को प्रेम का फल मिलना चाहिए था। परन्तु मनोरमा दोनों में से किसी एक से ही विवाह कर सकती थी। इसलिए यह जानने का भार मनोरमा पर ही छोड़ दिया कि उन दोनों में से किसका प्रेम अधिक था। उसने मनोरमा से कहा-"अगर इनमें से किसी एक के साथ तुझे शादी करने का मौका मिला तो तू किससे शादी करेगी?"

मनोरमा ने बिना हिचके नन्द को चुना। सुनत्सेन ने उनका वैभव के साथ विवाह किया और साल्व देश



को भी उसने नन्द को वापस कर दिया।

सुनन्द भी करता तो क्या करता? वह हताश हो पागल-सा इधर उधर घूमने लगा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा- "राजन्! यह बताओ मनोरमा ने यह कैसे निश्चय किया कि नन्द और सुनन्द में, नन्द को उस पर अधिक प्यार था। अपने सेवक सुनन्द को छोड़कर उस पर हमला करने की सोचने वाले नन्द को जब उसकी बहन ने चुना तो उसने क्यों नहीं आपत्ति की? अगर इन प्रश्नों का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया तो तुम्हारा सिर फूट जायेगा।"

"नन्द का प्रेम सुनन्द के प्रेम से अधिक था। इस बात में कोई सन्देह नहीं है। सुनन्द ने प्रेम तो किया था पर प्रेम के लिए उसने उतने बलिदान, कठिन काम करने की न सोची थी। उसे पत्नी बनाने के लिए उसने कोई काम न किया था। शरभ देश वापिस आना साहसिक अवश्य था। पर उसने यह तभी किया था, जब उसे मालूम हो गया था कि उसे कोई पहचान न सकेगा। पर नन्द की बात दूसरी थी। उसका उद्देश्य ही मनोरमा से विवाह करना था। इसलिए वह सुनन्द की स्पर्धा सह न सका। उसका कैद से छूटना, सुनन्द की खबर लेने के लिए एक दिन शरभ देश में ही रह जाना, सेना जमा कर राजा को जीतने का निश्चय करना आदि, काम उसने किये। वे बड़े ही साहसिक कार्य थे। इसलिए मनोरमा ने उसका प्रेम स्वीकार किया। पर सुनत्सेन के आपत्ति करने के लिए भी एक कारण था। मनोरमा के लिए नन्द ने सुनत्सेन से युद्ध करने की सोची थी। पर उसका जीतना सम्भव न था। साल्व देश तो कभी का निर्बल हो चुका था। वह जब शक्तिशाली था तभी उसने उसे पराजित किया था। उस हालत में नन्द उसका भयङ्कर शत्रु हो सकता था, ऐसी बात थी ही नहीं। प्रेम के कारण ही नन्द ने युद्ध की बात सोची थी। यह जानकर, सुनत्सेन विवाह के लिए मान गया।" विक्रमार्क ने कहा।

राजा का इस प्रकार मौन भङ्ग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर तुरन्त पेड़ पर चढ़ गया।

(कल्पित)





किसी जमाने में अरब के एक देश में दो चोर रहा करते थे। उनमें एक दिन में जेब काटा करता था। दूसरा रात को सेन्ध लगाकर घरों में चोरी किया करता।

इन चोरों ने एक सुन्दर लड़की को देखकर उससे विवाह करने का निश्चय किया। क्योंकि दोनों एक ही लड़की से प्रेम करते थे इसलिए वह लड़की निश्चय न कर पाती थी कि किससे विवाह करे। उसने उनसे इस प्रकार कहा-"तुम दोनों चोरी करके जीवन निर्वाह करते हो। तुम दोनों ही मेरा भरण-पोषण कर सकते हो। परन्तु तुम में से जो अधिक चतुर होगा मैं उसी से विवाह करना चाहती हूँ। इसलिए अगर तुम दोनों ने तय कर लिया कौन चतुर है तो मैं उससे विवाह कर सकूँगी।"

चोरों ने उसकी बात मान ली। उन्होंने एक दूसरे को अपनी चालाकी दिखाने का निश्चय किया।

"पहिले मैं तुझे अपना हुनर दिखाता हूँ फिर तुम अपना हुनर मुझे दिखाना। उसके बाद हम यह तय कर लेंगे कि हममें कौन अधिक चतुर है।" दिन के चोर ने रात के चोर से कहा।

रात का चोर यह मान गया। दोनों मिलकर सर्राफों के बाज़ार में गये। उन्होंने देखा कि एक महाजन हर दुकानदार के पास जाता और अपना कर्ज और सूद वसूल करता गली में चलता जाता था।

"उस महाजन को देखो। उसकी जेब में बहुत-सा रुपया होगा। देखते रहना में उसे चुरा लाऊँगा। " दिन के चोर ने कहा।



यह सुन रात का चोर हैरान रह गया। वह रात के अन्धेरे में चोरी कर सकता था। परन्तु दिन दहाड़े, लोगों के सामने वह जेवें काटना न जानता था। किन्तु यह हुनर दिन के चोर को आता था। वह उस महाजन के पीछे दो चार कदम चला। आसानी से उसकी जेब में से मोहरों की थैली निकाल ली और अपने दोस्त से जा मिला।

"तू सचमुच बहुत चतुर है।" रात के चोर ने कहा।

"मेरी चालाकी इस थैली के उड़ा लेने में नहीं है। मैं न्यायाधिकारी से भी कहलाकर दिखलाऊँगा कि यह थैली मेरी है। ऐसा न करने पर सिपाही मेरे पास से यह ले लेंगे। इसलिए मैं पहले ही यह सिद्ध कर दूँगा कि यह माल मेरा है।" दिन के चोर ने कहा।

"क्या यह सम्भव है?" रात के चोर ने पूछा।

"तुम ही देख लेना।" कहकर दिन का चोर अपने दोस्त को एक गली में ले गया। वहाँ उसने थैली खोलकर मोहरें गिनीं। उसमें ठीक पाँच सौ मोहरें थीं। उनमें से उसने दस लेकर अपनी जेब में डाल ली। उसने ताँबे की अपनी एक अंगूठी उस थैली में डालकर, थैली को पहले की तरह बाँध दिया।

फिर वह सर्राफ्रों की गली में महाजन के पीछे पीछे गया। उसने फिर वह थैली चालाकी से उसकी जेब में सरका दी। तब महाजन अपनी दुकान में जाने के लिए तैयार हो रहा था।

इतने में दिन का चोर चिल्लाया- "चोर, चोर, पकड़ो, पकड़ो।" वह महाजन पर कूदा। उसे दो चार मुक्के जमा दिये।

सब इकट्ठे हो गये। जेब कतरे ने उनसे कहा-"यह चोर है। देखो, देखने में कितना सीधा-सादा है। मेरी मोहरों की थैली लेकर इस तरह जा रहा है जैसे कुछ मालूम ही न हो।"

महाजन पर सभी को गुस्सा था। सबने कहा-"कचहरी ले जाओ।" जेबकतरा व्यापारी को, हाथ बाँधकर कचहरी ले गया। उसने न्यायाधिकारी से कहा-"इस बूढ़े ने मेरी मोहरों की थैली चुरा ली है। आपको फ़ैसला करना होगा।"

"चोरी गई थैली कहाँ है?" न्यायाधिकारी ने पूछा।

"जेब में डाल ली है। मैंने स्वयं अपनी आँखों देखा है।" जेबकतरे ने कहा।

महाजन की जब जेब टटोली गई तो उसमें थैली थी। महाजन ने घबराकर कहा-"यह तो मेरी थैली है। अपना कर्ज वसूल कर रहा था कि इस आदमी ने मुझ पर चोरी का अपराध लगा दिया। मैंने इस आदमी को कहीं देखा तक नहीं है।"

"अगर वह तेरी ही थैली है तो बता उसमें क्या है?" न्यायाधिकारी ने पूछा।



"उसमें पाँच सौ मोहरें हैं, बस।" महाजन ने निश्चिन्त होकर कहा।

"यह झूठ है। उसमें चार सौ नव्वे मोहरें हैं और मेरी ताम्बे की अंगूठी है। यह चोर आपके सामने झूट बोल रहा है।" जेब कतरे ने कहा। थैली खोलकर देखी गई तो उसमें चार सौ नब्बे मोहरें और ताम्बे की अंगूठी थी। न्यायाधिकारी ने उस थैली को जेब कतरे को दे दिया और महाजन को सौ कोड़ों की सज़ा दी।

जब रात का चोर थैली लेकर चला आ रहा था तो जेबकतरे ने पूछा-"कैसे रहे हमारे करतब?"

"जेवों के काटने में तेरी चालाकी सचमुच आश्चर्यजनक है। परन्तु रात में चोरी कैसे की जाती है, यह भी मैं आज तुझे दिखाऊँगा।" सेन्ध लगानेवाले चोर ने कहा।

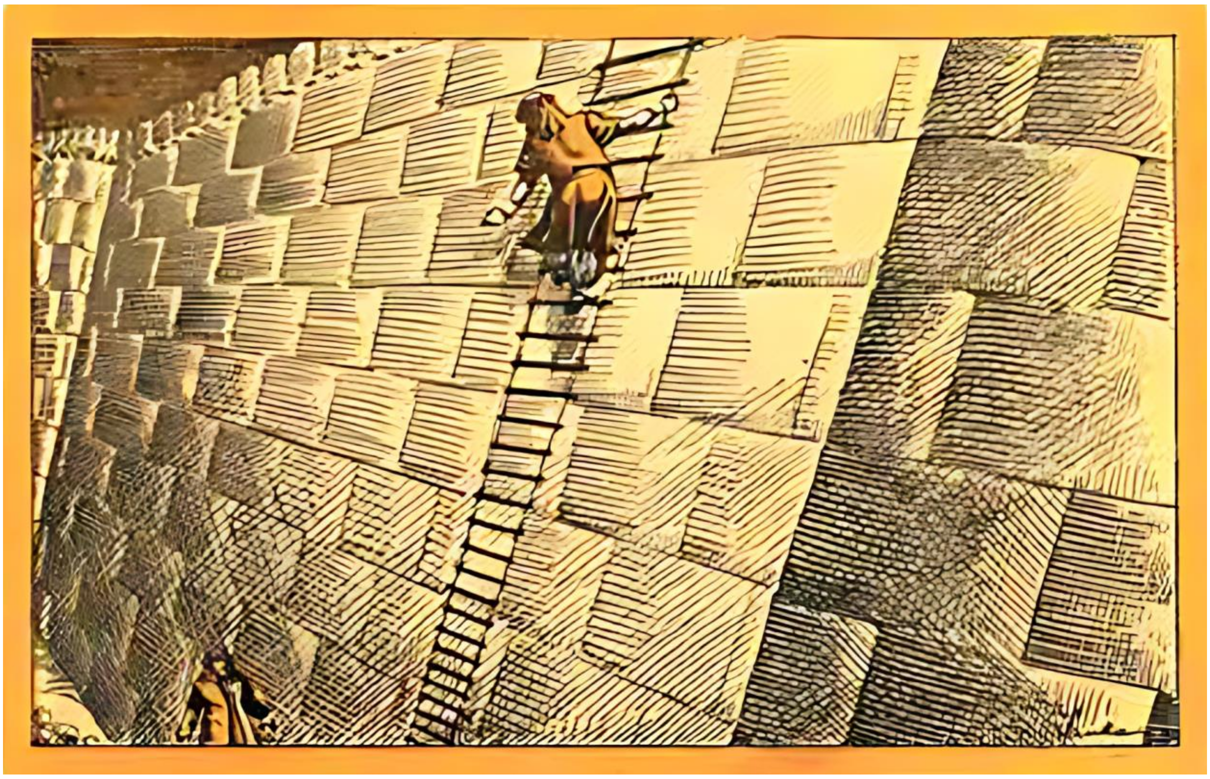
उस दिन रात को अन्धेरा होते एक रस्सी की सीढ़ी लेकर रात का चोर जेब कतरे को साथ लेकर राजमहल के पास गया।

"यह क्या? राजमहल में क्यों यों घुस रहे हो?" जेब कतरे ने भय से काँपते हुए पूछा।

"हाँ हाँ, मामूली घरों में घुस जाने में कौन-सी बड़ी बात है?" कहकर रात के चोर ने रस्सी की सीढ़ी दीवार पर फेंकी। जब वह एक जगह ठीक जम गई तो वह उस पर चढ़ गया। चढ़ते चढ़ते उसने जेबकतरे ही को भी ऊपर बुलाया और जेबकतरा इतना हैरान कि उसकी जान में जान न थी।

दोनों राजमहल के आङ्गन में आये।

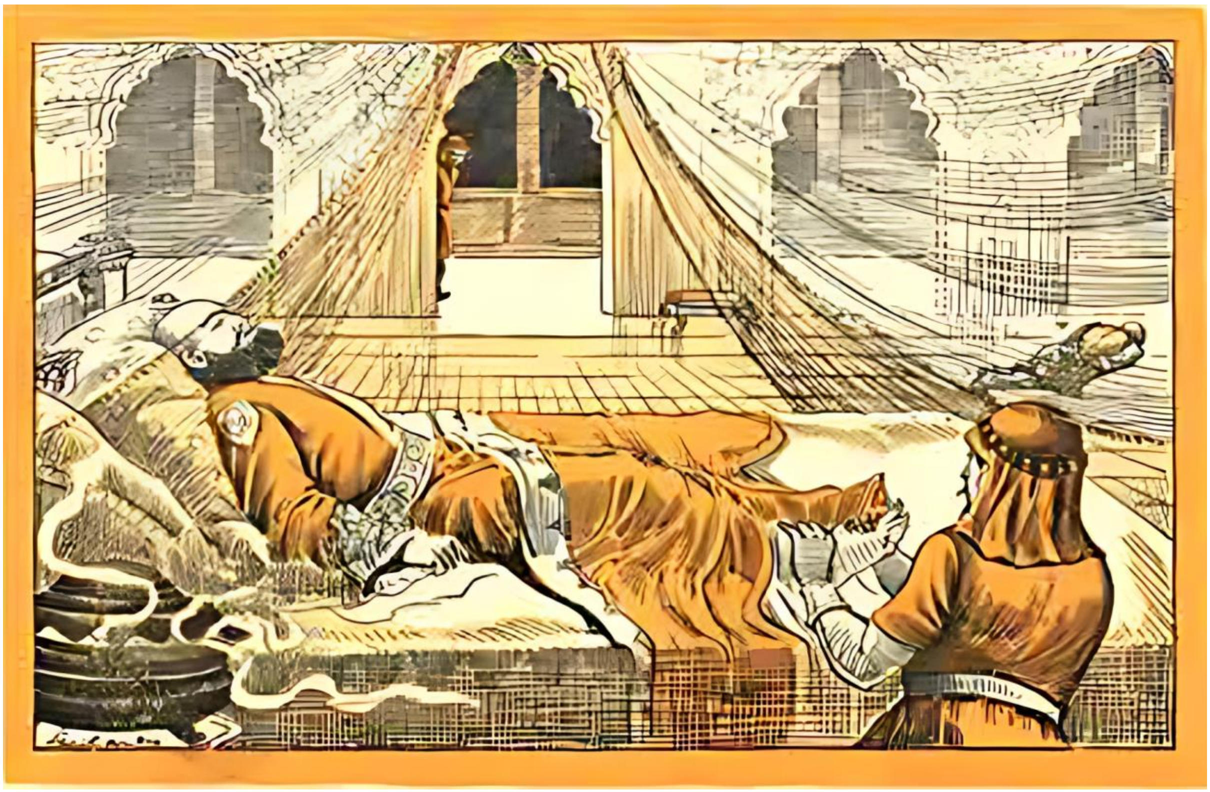
रात का चोर, राजमहल के दरवाजे को एक तरफ हटाकर, अन्दर जाकर राजा के कमरे की ओर चला। जेबकतरा भी डरता ड़रता उसके पीछे चला।



शयन कक्ष में राजा सो रहा था। एक गुलाम राजा के पैर दाबता ऊँघ रहा था। जेबकतरे को पासवाले कमरे में रहने का इशारा करके, रात का चोर बिना आहट के चलता गुलाम के पीछे गया। उसे पीछे से पकड़कर उसके मुख में कपड़े ठूँस दिये। रस्सी से बाँधकर उसे कमरे के एक कोने में डाल दिया। उसकी जगह स्वयं बैठकर राजा के पैर दबाने लगा।

उसने जान बूझाकर राजा के पैर इतने जोर से दबाये कि राजा की नींद उचट गई। रात के चोर ने आवाज़ बदलकर कहा-"लगता है, हुज़ूर की नींद टूट गई। एक छोटी-सी कहानी सुनाता हूँ। गौर कीजिये।

एक शहर था। उस पर कोई राजा राज्य किया करता था। उस शहर में एक जेब कतरा और एक सेन्ध लगानेवाला चोर रहा करते थे। उन दोनों में एक समस्या पैदा हुई कि उनमें कौन अधिक चतुर था। पहले जेबकतरा अपनी चालाकी दिखाने के लिए रात के चोर को सर्राफों की गली में ले गया- कहकर उसने सारा किस्सा सुनाया। फिर उसने यह भी सुनाया कि कैसे वह राजमहल में



आया था, कैसे वह गुलाम को अलग करके उसकी जगह आ बैठा था। फिर उसने पूछा-"महाराज! आप ही बताइये कि इन दोनों में कौन अधिक चालाक है? जेबकतरा कि सेन्ध लगानेवाला?"

राजा ने यह समझकर कि यह कोई किस्सा है, तुरन्त कहा-"सेन्ध लगाने वाला चोर ही।" यह बात दूसरे कमरे में खड़े जेबकतरे को भी सुनाई दी। फिर वह राजा के पैर तब तक दबाता रहा जब तक उसे नींद न आ गई। उसके बाद वह अपने दोस्त के साथ राजमहल से चला आया।

अगले दिन जब राजा उठा तो उसने देखा कि गुलाम बँधा हुआ था। उसे मालूम हुआ कि उसने जो कुछ सुना था, वह कहानी न थी, घटना थी। उसे यह भी मालूम हो गया कि उस कहानी को सुनानेवाला रात का चोर ही था। उसने उसकी अक्लमन्दी की प्रशंसा की। फिर उसने घोषणा निकलवाई कि अगर पिछली रात को मेरे कमरे में आनेवाले चोर ने मुझे सूचना दी तो मैं उसे नौकरी दूँगा।

यह घोषणा सुन सेन्ध लगानेवाले चोर ने राजा के दर्शन किये। अपने वचन के अनुसार राजा ने अपने यहाँ उसको अच्छी नौकरी दी।

राजा का फैसला क्योंकि जेबकतरे ने स्वयं अपने कानों सुना था इसलिए वह कुछ कह न सकता था। उस लड़की ने जिस पर दोनों का प्रेम था, सेन्ध लगानेवाले चोर से शादी कर ली। और इस तरह वह राज्य के एक बड़े कर्मचारी की पत्नी हो गई।





[२]

[वसन्तोत्सव पर तीन सिद्धों ने आकर फारस के बादशाह को तीन विचित्र चीजें भेंट मैं दीं। उनमें से एक जादू का घोड़ा था। इन भेंटों के बदले में बादशाह ने अपनी तीनों लड़कियों का उन तीनों से विवाह करने का निश्य किया। जादू का घोड़ा जिसने दिया था, वह बहुत बूढ़ा था। बादशाह की छोटी लड़की बहुत सुन्दर थी। वह उससे शादी न करना चाहती थी। वह रोने लगी, उसको रोता देख, बादशाह के लड़के कमाल अम्मार ने शादी पर आपत्ति प्रकट की। फिर उसने जब जादू के घोड़े कि परीक्षा करनी चाही तो बूढ़े सिद्ध ने उसे उड़ने की कील तो बताई पर उतरने की न बताई। इसलिए अम्मार आकाश में उड़ तो गया पर वापस न आया। बादशाह ने सिद्ध को पिटवाकर कैदखाने में दलवा दिया और स्वयं दुख सागर में डूब गया।]

इस बीच जादू का घोड़ा इस तरह उड़ रहा था मानों शीघ्र ही सूर्य तक पहुँच जायेगा। राजकुमार अम्मार घबराने लगा।

"उस बूढ़े सिद्ध ने मुझे नष्ट करने के लिए ही यह किया है। उसे शायद मुझ पर गुस्सा आ गया है कि मैंने उसे अपनी छोटी बहन से शादी करने न दी। अब क्या करूँ? इस आपत्ति से कैसे बाहर निकलूँ? जब इस घोड़े में ऊपर चढ़ने के लिए कील है तो उतरने के लिए भी होगी।



यह सोचकर वह घोड़े की सावधानी से परीक्षा करने लगा। घोड़े की जीन के दायें ओर उसे एक कील-सी दिखाई दी। उसका कुतूहल बढ़ा।

"घोड़े पर इसके सिवाय और कुछ नहीं दिखाई देता।" यह सोच उसने उसे दबाया। वायुवेग से जाता हुआ घोड़ा, धीमे धीमे रुकता गया। थोड़ी देर में वह आकाश में रुककर नीचे उतरने लगा। उतरते समय भी उसकी गति बढ़ती जाती थी। राजकुमार डरने लगा कि अगर वह इस गति से उतरा तो घोड़ा भूमि से टकरायेगा और उसका नामों निशान भी न रहेगा। पर ऐसा न हुआ। भूमि पास आई तो घोड़े की गति भी मन्द हो गई। आखिर, वह पक्षी की तरह मण्डराता धीमे से भूमि पर उतरा। राजकुमार की जान में जान आई। उसे घोड़े का रहस्य मालूम हो गया था और उसकी जान भी बच गई थी। इसलिये उसने अल्लाह को दुआ दी।

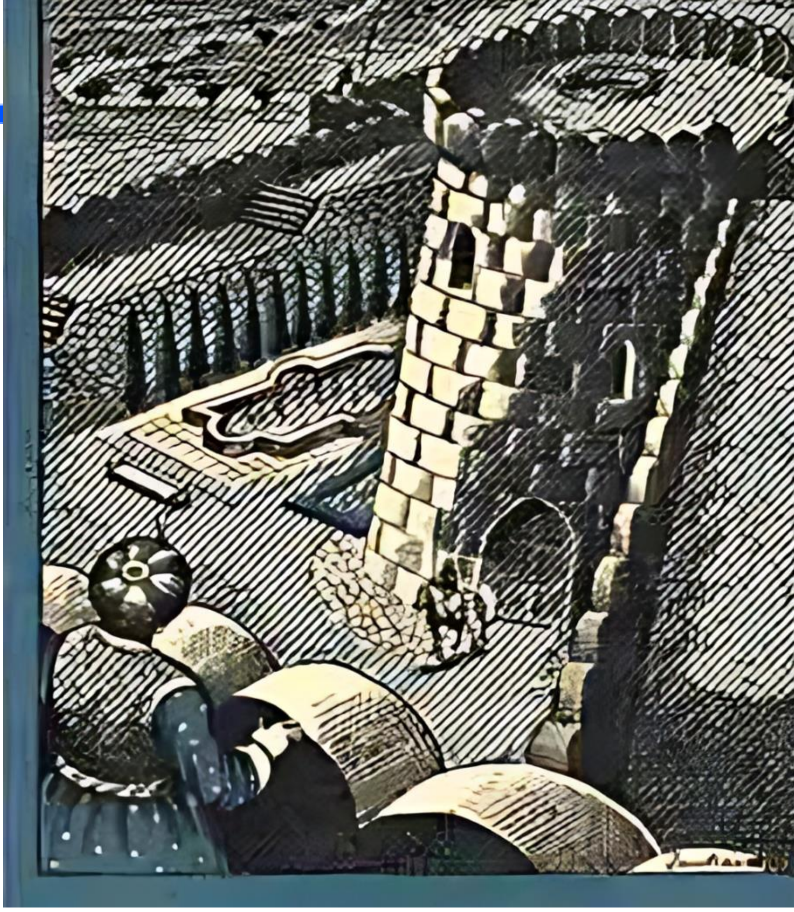
फिर उसने उस घोड़े को किस तरह चलाया जाता था सब घुमा फिराकर जाना। वह घोड़ा केवल उड़ता, उतरता ही न था, आगे पीछे भी चलता था। कभी वायुवेग से कभी धीमे धीमे भी चल सकता था। लगाम से घोड़ा इधर उधर भगाया जा सकता था। इन सब का राजकुमार ने अभ्यास किया। सब कुछ जानने के बाद वह घोड़े को आकाश में कुछ दूर ले गया। मामूली गति से, अनेक नदी, पहाड़, नगर, देश, समुद्र पार करता वह निकल पड़ा। इस बार उसने कई ऐसी चीजें देखीं, जो उसने पहले न देखी थीं। कितने ही नये नगर, व देशों को देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न था।

वह जब यों आकाश में जा रहा था तो उसे नीचे एक सुन्दर नगर दिखाई दिया। उस नगर के मकान चित्रों की तरह सुन्दर जान पड़ते थे। नगर में हरियाली की कालीन-सी बिछी हुई थी। उन पर हरिण वगैरह दौड़ रहे थे। उस देश में जहाँ देखो, वहाँ जल प्रवाह थे। बहुत ही सुन्दर दृश्य था।

राजकुमार अम्मार अपने घोड़े पर उस नगर का चक्कर लगा गया। वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेते हुये उसने सोचा- "मालूम करना है कि यह नगर क्या है, यह किस देश में है।" ठीक उसी समय सूर्यास्त हो गया और अन्धकार छाने लगा।

"यह रात आज यहीं बिताऊँगा। कल सवेरे उठकर घर जाऊँगा और पिता जी से और मित्रों से, जो आश्चर्य जनक चीजे मैंने देखी हैं, जो अनुभव मुझे हुये हैं, उनके बारे में कहूँगा।" उसने सोचा।

वह सोच रहा था कि घोड़ा कहाँ उतारे कि नीचे राजमहल-सा कुछ दिखाई दिया। वह ठीक नगर के



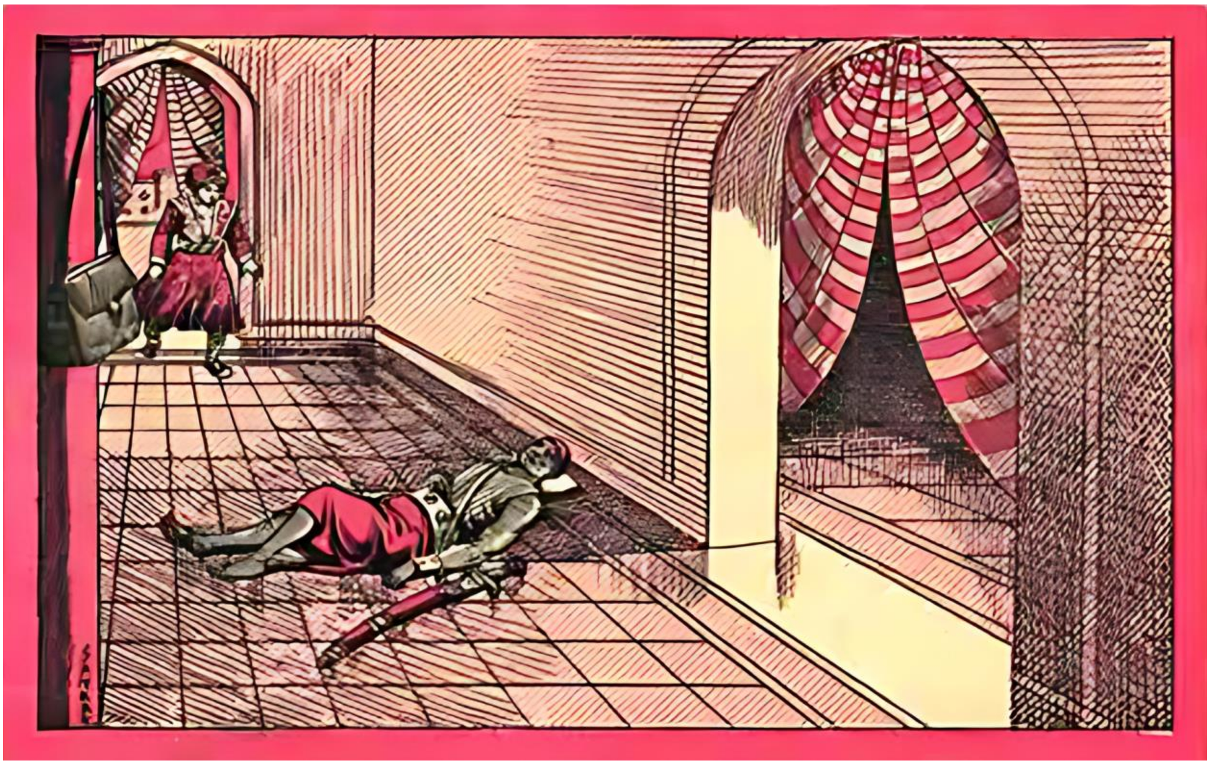
बीचों बीच था। उसके चारों ओर बुर्ज थे। कवच पहने, भाले, बाण आदि लेकर चालीस सैनिक वहाँ पहरा दे रहे थे। आसपास लोगों की चहल पहल थी।

राजकुमार ने कील दबाकर, घोड़े को राजमहल के उपरले भाग पर उतारा। घोड़े से उतरकर, वह उसे देखकर बड़ा खुश हुआ। उसने सोचा-"इस घोड़े का बनानेवाला कोई मामूली आदमी नहीं है। अगर मैं अल्लाह की मेहरबानी से घर पहुँच गया तो उस बूढ़े को कितने ही ईनाम दूँगा। वह अवश्य कोई न कोई सिद्ध पुरुष है।"

काफी अन्धेरा हो गया। परन्तु जब तक राजमहल में लोगों का चलना-फिरना बिल्कुल बन्द न हो गया तब तक वह ऊपर से न आया। बहुत देर हो गई। उसे भूख लगी। आखिर वह भोजन की तलाश में ऊपर से सीढ़ियाँ उतरकर धीमे धीमे आया।

उसे वहाँ एक भवन-सा दिखाई दिया। वहाँ सङ्गमरमर का फर्श था। उस पर सफेद चाँदनी पड़ रही थी। फर्श चमचमा रहा था। कहीं किसी के आने जाने की आवाज न थी। सर्वत्र नीरवता थी।

चकित होकर इधर उधर देखते हुए उसने सोचा-"क्या जरूरत है इसकी? आज रात जैसे तैसे छत पर ही काट दूँगा, कल सबेरे उठकर अपने देश चला जाऊँगा।" वह यह सोच रहा था कि राजमहल के अन्दर उसे एक मशाल दिखाई दी। उसकी रोशनी में, अन्तःपुर के द्वार के बाहर, गुलाम खर्राटे मारता दिखाई दिया। उसका बिस्तर रास्ते के बीच में था। मशाल की रोशनी में उसकी तलवार चमक रही थी। उसकी भोजन की थैली काले पत्थर के एक खम्भे से

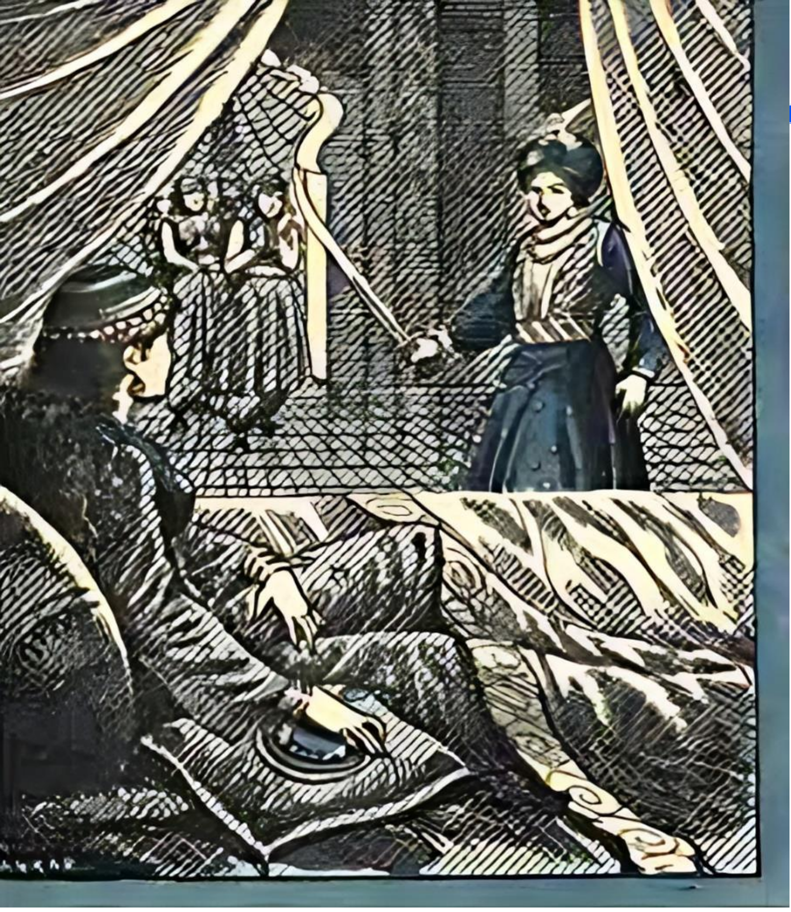


लटक रही थी। वह सो रहा था फिर भी भयङ्कर लगता था।

उस नीग्रो गुलाम को देखते ही राज-कुमार को कँपकँपी-सी हो गई। वह हथेली पर जान रखकर, धीमे धीमे पैर रखता भोजन की थैली के पास गया। उसे खम्भे से उतारकर अलग चला आया। उसमें स्वादिष्ट खाने की चीजें थीं, राजकुमार ने उन्हें खाया और पास के फव्वारे में पानी पीकर उसे यथास्थान लटका दिया। नीग्रो गुलाम तब भी नाक बजाता जाता था। राजकुमार ने उसके तलवार की म्यान लेकर, तलवार बाहर खींची। शब्द हुआ। मगर तब भी वह न उठा।

राजकुमार हिम्मत करके अन्तःपुर में गया। थोड़ी दूर जाने के बाद उसे एक और दरवाजा दिखाई दिया। उस दरवाजे पर मखमल का परदा लटक रहा था। वह परदा हटाकर एक विशाल शयन कक्ष में घुसा। उस कमरे में हाथी दान्त के पलङ्ग पर एक बहुत ही सुन्दर स्त्री सो रही थी। वह उस देश की राजकुमारी थी। उसके पलङ्ग के चारों पायों के पास चार दासियाँ





फर्श पर पड़ी सो रही थीं। उनके सिवाय वहाँ और कोई न था।

राजकुमार अम्मार, राजकुमारी का सौन्दर्य देखकर स्तम्भित हो, खम्भे की तरह खड़ा हो गया। इतने में राजकुमारी उठी। एक अजनबी को वहाँ देखकर वह न ड़री, बल्कि उसने पूछा-"तुम कौन हो?"

अम्मार ने उसके पास जाकर कहा-"तुम से प्रेम करके, तुमसे शादी करने आया हूँ।" उसने निर्भय हो राजकुमारी को जवाब दिया।

"तुम्हें अन्दर किसने आने दिया?" राजकुमारी ने फिर पूछा। उसका नाम शक्स अल नहर था।

"अल्लाह ने आने दिया। मेरी किस्मत मुझे यहाँ लाई है।" अम्मार ने उसकी तरफ देखते हुए कहा।

"कल मुझसे विवाह करने के लिए हिन्द देश से कोई राजकुमार आया था। कहीं वह तुम ही तो नहीं हो? वह क्योंकि सुन्दर न था इसलिए मेरे पिताजी शादी के लिए राजी न हुये। तुम तो खूबसूरत हो।" राजकुमारी नहर ने बिना हिचकिचाये कहा।

यह सुन राजकुमार बड़ा खुश हुआ। उसके जबाब देने से पहले दासियाँ उठ गई। अजनवी को देखकर घबराते हुए उन्होंने ऊँची आवाज में पूछा-"मालकिन! ये कौन हैं?"

"मुझे नहीं मालूम! आँखें खोलीं थी तो ये सामने थे। शायद ये वे ही राजकुमार हैं, जो कल मुझसे शादी करने आये थे।" नहर ने कहा।

"नहीं, नहीं। वह तो बदसूरत थे। हमने देखा था।" कहकर दासियों ने

गुलाम को उठाया। उसे डाँटा डपटा-"क्यों? क्या तुम इसी तरह अन्तःपुर का पहरा देते हो? इस आदमी को क्यों अन्दर आने दिया? हम तुम्हारी शिकायत करेंगे।"

नीग्रो गुलाम ने तलवार निकालनी चाही, पर उसकी म्यान खाली थी। वह और भी घबरा गया। शयन कक्ष में आकर उसने राजकुमार से पूछा-"आप आदमी हैं या भूत?"

"नीच कहीं का। मुझे भूत कहता है! देख तुझे क्या करता हूँ।" अम्मार तलवार लेकर उस पर लपका।

"मुझे यों ही न मारिये। कृपया बताइए कि आप कौन हैं।" गुलाम ने पूछा।

"मैं राजा का दामाद हूँ। इसलिए ही मैं उस जगह आया हूँ, जहाँ मेरी पत्नी है।" राजकुमार ने कहा।

"हुजूर, जब आप यह कहें तो मैं क्या कह सकता हूँ।" यह कहकर गुलाम भागकर राजा को उठाने लगा। जोर जोर से भय के कारण चिल्लाने लगा। वह पागल सा हो गया।



राजा ने उसको भयभीत देखकर पूछा-"क्यों, क्या बात है? जल्दी बताओ।"

"महाराज, राजकुमारी के कमरे में कोई भूत घुस गया है और अपने को आपका दामाद बता रहा है। तुरन्त जाकर आप उस भूत को भगाइये।" गुलाम ने कहा।

राजा को इतना गुस्सा आया कि उसे मारने की इच्छा हुई। "मूर्ख, तुमने वहाँ रहकर भी उस भूत को क्यों अन्दर जाने दिया?" तुरन्त वह राजकुमारी के कमरे में

गया। वहाँ उसकी दासियों से पूछा- "क्यों, क्या बात है?"

"हम कुछ नहीं जानते, हुजूर! जब हम उठीं तो ये राजकुमारी से बातें कर रहे थे। जाने कहाँ से और कैसे ये आये!" दासियों ने नीचे मुँह करके करते हुए कहा।

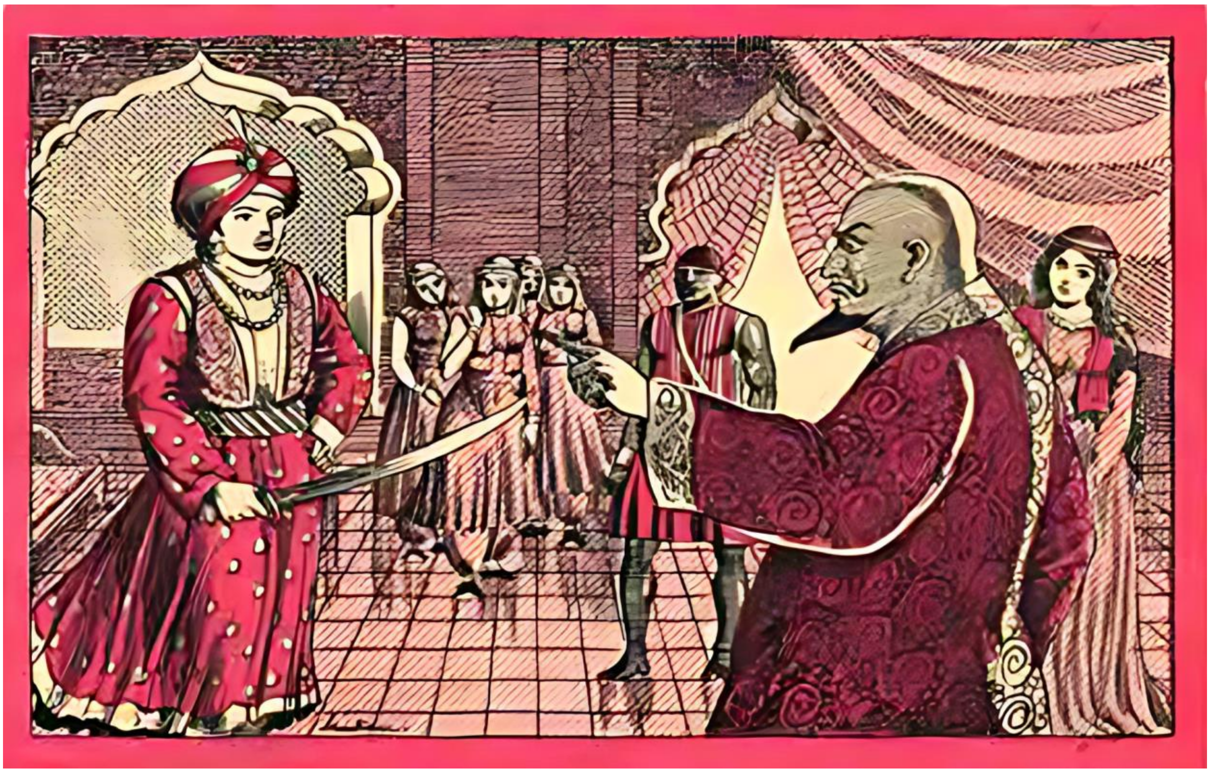
राजा अम्मार के पास आने लगा।

इस बीच राजकुमार ने राजकुमारी से पूछा-"यही तुम्हारे पिता हैं?" उसके हाँ कहने पर वह राजा की ओर लपका और उसे उसने खूब मारा पीटा।

उसे देखकर राजा को डर लगा। "ज़रा ठहरो! तुम राजकुमार हो या भूत?" उसने पूछा।

"मैं राजकुमार हूँ। यह जानकर कि तुम्हारी लड़की बहुत सुन्दर है उससे शादी करने आया हूँ। इसलिए सब सुन ली, वरना और कोई मुझे भूत बताता तो उसका सिर एक चोट में धड़ से अलग कर देता।" अम्मार ने कहा।

"अगर तुम सचमुच राजकुमार हो तो चोरी चोरी अन्तःपुर में क्यों आये? फिर ऊपर से अपने को मेरा दामाद भी बताते



हो? अगर मैं अब अपने सैनिकों को बुलवाकर तुम्हें मरवा दूँ तो तुम्हारी कौन पूछनेवाला है?" राजा ने अम्मार से रौब से पूछा। "आप तो अनजाने ही बातें कर रहे हैं। आपको मुझ से अच्छा दामाद कहाँ मिलेगा? अगर सैनिकों को बुलवाकर आपने उन्हें जानने दिया कि आपकी लड़की के कमरे में कोई पराया आदमी आया है तो बदनामी आपकी लड़की की है न?" अम्मार ने कहा।

"हाँ, यह ठीक है। परन्तु मेरी लड़की का विवाह सब के सामने होना चाहिए। अगर बिना किसी के जाने हो गई तो वह भी तो मेरे लिए अपमानजनक है न? इसलिए काज़ी के सामने तुम ही मेरी लड़की से शादी करो।" राजा ने ठण्डे होते हुए कहा।

"अच्छा, वैसे ही शादी करूँगा। परन्तु मैं उसके लिए कुछ नियम बताऊँगा। अगर वे आप मान गये तो आपकी इच्छानुसार शादी होगी।" अम्मार ने कहा।

"क्या हैं वे नियम?" राजा ने आश्चर्य से पूछा।

"एक तो यह है कि आप मुझ से तलवार लेकर लड़ें। अगर आप हार गये





तो अपना सिंहासन आपको मुझे देना होगा। नहीं तो आजकल आपके पास जितनी सेना है, उसे मुझसे युद्ध करने के लिए कहें। आपके पास कितने सैनिक हैं?"

"चालीस हजार सैनिक और इनके अलावा चालीस हज़ार गुलाम हैं।" राजा ने कहा।

"उन अस्सी हजार आदमियों को मुझसे युद्ध करने के लिए भेजिये। अगर उन्होंने मुझे मार दिया तो आपकी लड़की की कोई बदनामी न होगी। अगर मैं जीत गया तो लोग आपको मुझ जैसे दामाद के मिलने पर बधाई देंगे।" अम्मार ने कहा।

राजा दोनों बातें मान गया। राजा ने सोचा कि यह लड़का जरा पागल है, वह ज़रूर सैनिकों द्वारा मार दिया जायेगा। उसने गुलाम को बुलाकर कहा-"तुम जाकर मन्त्री से कहो कि मैदान में सारी सेना को उपस्थित करे।"

राजा की आज्ञा के अनुसार मन्त्री ने अस्सी हजार सैनिकों को मैदान में खड़ा कर दिया। युद्ध करने के लिए



अम्मार को एक घोड़े की ज़रूरत थी। इसलिए राजा ने एक नौकर को बुलाकर कहा-"अपनी अश्वशाला में एक अच्छे घोड़े को देखकर उसे युद्ध के लिए तैयार करके ले आओ।"

यह सुन अम्मार ने कहा-"महाराज! वह घोड़ा यहीं है, जो मुझे यहाँ लाया था। मुझे और किसी घोड़े की ज़रूरत नहीं है।"

"अच्छा, जैसी तेरी मर्जी।" राजा यह कहकर उसको अपने साथ मैदान में ले गया। वहाँ सन्नद्ध हो सैनिक पंक्ति में खड़े थे। उनसे राजा ने इस प्रकार कहा-

"सैनिक! यह युवक मेरी लड़की से विवाह करने आया है। यह कह रहा है कि वह बहुत बहादुर है और तुम सबको अकेला ही जीत सकता है। अगर यह सच हो तो गर्व की बात है, अगर न हो तो यह केवल दुस्साहस ही है। इसलिए यह जब तुम पर हमला करे तो तुम बिना किसी दया दाक्षिण्य के इससे युद्ध करना।" सावधान रहना।

राजा ने अम्मार की ओर मुड़कर कहा-"अब तुम युद्ध शुरु कर सकते हो।"

"यह अन्याय है। मैं खड़ा खड़ा कितनों से युद्ध कर सकता हूँ।" अम्मार ने पूछा।

"मैं जब घोड़ा दे रहा था तो तुमने क्यों मना किया? अब भी कोई बात नहीं; क्या घोड़ा तैयार करने के लिए कहते हो?" राजा ने पूछा।

"मेरा अपना घोड़ा है। मुझे किसी और घोड़े की जरूरत नहीं है।" अम्मार ने कहा।

"तो वह घोड़ा कहाँ है?" राजा ने पूछा।

"वह आपके महल की छत पर है।" अम्मार ने कहा।

"छत पर?" राजा ने आश्चर्य से पूछा। उसे फिर सन्देह हुआ कि उस लड़के का दिमाग जरा फिरा हुआ था।

"घोड़ा छत पर कैसे होगा? आओ, फिर भी देखें।" कहकर उसने अपने सेना नायक से कहा-"जाकर देखो कि राजमहल की छत पर क्या है, अगर कुछ दीख पड़े तो साथ ले आना। ये कहते हैं कि इनका घोड़ा है।"

वहाँ एकत्रित लोग आपस में कहने लगे-"क्या घोड़ा सीढ़ी चढ़कर छत पर जा सकता है? क्या आश्चर्य की बात है?" वे कानाफूसी करने लगे।

(अभी है)





[१३]

[जब रूपधर का पता-ठिकाना कुछ न मालूम हुआ तो उसको मृत जान कई राजकुमारों ने उसके घर आकर धरना दिया और वे रूपधर की पत्नी को उनमें से एक से विवाह करने के लिए बाधित करने लगे। रूपधर का छोटा लड़का धीरमति अपने पिता के बारे में जानने के लिए नौका में नवद्योत और प्रताप से मिलने गया।]

इस बीच, इथाका में रूपधर के घर इकट्ठे हुए युवक निश्चिन्त हो खा रहे थे, पी रहे थे, जुये में समय व्यतीत कर रहे थे। वे नहीं जानते थे कि धीरमति पैलास गया हुआ था। घर के बाहर जब वे जुआ खेल रहे थे तो एक नवयुवक ने आकर दुर्बुद्धि से पूछा-"क्या आप जानते हैं कि कब धीरमति पैलास से बापस आ रहा है? वह मेरी नाव ले गया है और अब मुझे अपनी नाव की जरूरत है। में समुद्र पार जाकर एक जङ्गली घोड़ा लाना चाहता हूँ।" सब आश्चर्य में एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

दुर्बुद्धि ने उस युवक से पूछा-"धीरमति क्या पैलास गया है? क्या उसने तेरी नाव ली है? क्या उसे वह तुझसे पूछकर ही ले गया था? यह सब कब की बात है? उस नाव के नाविक



कौन हैं? क्या वे धीरमति के ही नौकर हैं? या शहर के युवक हैं? धीरमति किस काम पर पैलास गया है?" उसपर उन्होंने प्रश्नों की बौछार की।

"मेरी इच्छा पर ही वह नाव ले गया है। जब इतना बड़ा आदमी आकर पूछे तो मैं न कैसे कर सकता हूँ? शहर के लड़के ही नाबिक होकर गये हैं। सहन उन लोगों का सरदार बनकर गया है।" उस युवक ने दुर्बुद्धि को जवाब दिया।

दुर्बुद्धि की आँखें आग बरसाने लगीं। उसने अपने साथियों की ओर मुड़कर कहा-"हम यह नहीं सह सकते। हमारी आँखों में धूल झोंक कर, नाव लेकर, नाविकों को जमा करके चला गया। इस छोकरे की इतनी हिम्मत! एक ऐसी नाव लाओ जो बाण की तरह चले। बीस नाविकों को इकट्ठा करो। मैं धीरमति की खबर लेकर रहूँगा।"

तब उन्होंने मिलकर आपस में सलाह मशवरा किया। दुर्बुद्धि ने छुप छुपाकर, धीरमति को वापसी रास्ते पर मारने का निश्चय किया।

उनके षड़यन्त्र के बारे में पद्ममुखी को नौकरों द्वारा मालूम हुआ। वे दुष्ट उसके लड़के को मारने का प्रयत्न कर रहे थे, यह जानने से पहले वह न जानती थी कि धीरमति कहाँ गया हुआ था।

"इतने नौकर-चाकर हैं। पर किसी ने भी न बताया कि मेरा लड़का समुद्र यात्रा पर गया हुआ है। अगर मुझे मालूम होता तो मैं उसे जाने न देती।" पद्ममुखी रोने लगी।

"दुल्हन, लगता है, शादी के लिए रो रही है। शायद यह नहीं जानती कि उसका लड़का चला जायेगा।" एक दुष्ट ने कहा।

"देखो, कोई भी लापरवाही से बातें न करे। धीरमति की हत्या के बारे में दीवार को भी न मालूम हो।" यह कहकर दुर्बुद्धि, हट्टे-कट्टे बीस साथियों को चुनकर समुद्र के किनारे गया। एक नाव में भाले, तलवार रखकर, चप्पू ठीक कर उसे वे तट से कुछ दूर ले गये। यहाँ उन्होंने लङ्गर डाला। फिर वापस आकर उन्होंने समुद्र के किनारे भोजन किया। भोजन करके वे रात्री की प्रतीक्षा करने लगे।

उस दिन पद्ममुखी ने भोजन न किया। उसे ठीक तरह नींद भी न आई। वह सोचने लगी कि वह अपने लड़के को देखेगी या उसके शव को। ठीक उसी समय अन्धेरे में उसे अपनी बहन का आकार दिखाई दिया-"बहिन! क्यों दुःखी होती हो? तेरे लड़के पर कोई खतरा नहीं आयेगा।" उसने कहा और देखते-देखते वह अदृश्य हो गई।

उसी दिन रात को वे दुष्ट नाव को एक पथरीले द्वीप के पास ले गये। वहाँ लङ्गर डालकर वे धीरमति की प्रतीक्षा करने लगे।



और इधर धीरमति प्रताप से विदा लेकर निकल पड़ा। समुद्र तट पर जाकर नाविकों से मिलकर, देवताओं को बलि देकर उसने घर की ओर नौका में प्रस्थान किया। परन्तु वह अपनी नौका सीधे नगर न ले जाकर एक और बन्दरगाह में ले गया। वहाँ वह स्वयं उतर गया। उसने अपने साथियों से कहा-"तुम नगर चले जाओ। में एक बार अपने सूअरों के रखवाले से मिलकर नगर वापिस आऊँगा।"

धीरमति जब सूअरों के रखवाले के झोंपड़े के पास गया तो उस समय रूपधर



और वह झोंपड़े में ही खाना पका रहे थे। झोंपड़े के बाहर कुत्तों ने उसे पहचान लिया और वे दुम हिलाने लगे।

"कोई आया है- या तो कोई तेरी जान पहचान का है, नहीं तो कोई मेरा मित्र है। क्योंकि कुत्तों का भोकना तो अलग वे उसका प्रेम से स्वागत करते मालूम होते हैं।" रूपधर ने सूअरों के रखवाले से कहा।

रूपधर ने कहना खतम ही किया था कि धीरमति झोपड़े के द्वार के पास आकर खड़ा हो गया। उसे देखते ही सूअरों का रखवाला विस्मित हो उठा। अपने मालिक के पास जाकर उसे इस तरह आलिङ्गन किया जैसे किसी दूर देश से उसका लड़का वापस आया हो। उसने कहा-"आ गये बेटा! मैंने न सोचा था कि कभी मैं तुझे इन आँखों से देख पाऊँगा। अन्दर आओ। सुना है कि पैलास गये थे?" उसकी आँखों से आनन्द के आँसू बहने लगे।

"चाचा! वहीं से आ रहा हूँ। हमारे घर के बारे में क्या खबर है? क्या माँ ने शादी कर ली है?" धीरमति ने पूछा।

"बाबू ! ऐसी तो कोई बात नहीं हुई। परन्तु रात-दिन वे दुख के कारण सूखती जाती हैं।" धीरमति के हाथ से भाला लेते हुए सूअरों के रखवाले ने कहा।

धीरमति को अन्दर आता देख रूपधर ने उठकर उसे स्थान देना चाहा। पर धीरमति ने कहा-"बाबा, उठो मत! बैठने के लिए एक और आसन मिल जायेगा।"

रूपधर फिर बैठ गया। सूअरों के रखवाले ने धीरमति के लिए एक और खाल बिछाई। फिर तीनों ने मिलकर

भोजन किया। भोजन के बाद सूअरों के रखवाले से धीरमति ने पूछा-"चाचा! ये नये आदमी कौन हैं?"

"बाबू, ये कहते हैं कि ये कीट देश के हैं। सारा संसार धूमे हैं। इनके भाग्य में देश विदेश घूमना ही लिखा है। वे किसी आपत्ति से बचकर मेरे झोपड़े में आश्रय के लिए आये हैं। मैं इन्हें तुम्हें सौंपता हूँ, जो तुम चाहो सो करो।" सूअरों के रखवाले ने कहा।

"यह तो अच्छी परीक्षा है चाचा! मैं इस अतिथि को अपने घर कैसे ले जाऊँ? मैं छोटा हूँ और मेरे घर में शत्रु भरे पड़े हैं। वे सब मेरी माता से विवाह करना चाहते हैं और माँ कुछ निर्णय नहीं कर पा रही है। इस हालत में मैं केवल इनकी इतनी सहायता कर सकता हूँ कि मैं पहनने के लिए कपड़े, चप्पल और तेज़ तलवार दूँ। वे जहाँ चाहें वहाँ जा सकते हैं। नहीं तो तुम ही इन्हें अपने झोपड़े में रखकर उनकी देखभाल करो। उनके भरण-पोषण का भार मुझपर ही होगा। कपड़े भोजन आदि सब में दूँगा। लेकिन



इनका उन दुष्टों के बीच आना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। वे इनको बहुत तङ्ग करेंगे और में वह सब न देख पाऊँगा।" धीरमति ने कहा।

फिर उसने सूअरों के रखवाले को पास बुलाकर कहा-"चाचा! तुम तुरन्त हमारे घर जाओ। माँ को अलग बुलाकर कहो कि मैं पैलास से वापस आ गया हूँ। तेरी झोपड़ी में हूँ। मेरे बारे में कोई चिन्ता न करे।"

"बाबू, जब से आप गये हैं आपके नाना ने भी भोजन नहीं छुआ है। क्या उनको भी बता आऊँ कि आप वापस



आ गये हैं? बूढ़े हैं बिचारे!" सूअरों के रखवाले ने कहा।

"तुम और कहीं मत जाना। माँ से कहना कि मौका देखकर किसी नौकर द्वारा वे मेरी खबर नाना को पहुँचा दें। परन्तु तुम तुरन्त वापस चले आओ।" धीरमति ने कहा।

सूअरों का रखवाला चला गया। झोंपड़े में बाप बेटे दोनों ही रह गये।

यकायक झोंपड़े के बाहर, रूपधर को बुद्धिमती दिखाई दी। उसने उसको बाहर आने का सङ्केत किया। रूपधर अकेला बाहर गया। देवी ने उससे कहा-"तुम अपने लड़के को बताओ कि तुम कौन हो? उसकी सहायता से अपने शत्रुओं का नाश करने का प्रयत्न करो। मैं क्योंकि तुम दोनों की मदद कर रही हूँ इसलिए तुम डरो मत।" कहकर उसने रूपधर पर डण्डा फेरा।

तुरन्त रूपधर की झुर्रियाँ उड़ गई। वह फिर युवक हो गया। उसके कपड़े भी बदल गये। इस तरह परिवर्तित रूपधर को देखकर धीरमति चकित हो गया।

"आप कौन हैं? आप अवश्य कोई देवता हैं? साधारण मनुष्य इस प्रकार अपना रूप नहीं बदल सकते हैं। यही नहीं, साधारण मनुष्यों में इतना तेज़ भी नहीं होता।"

रूपधर ने स्वयं अपने बारे में कहा। "मैं तेरा पिता रूपधर हूँ। बेटा! बहुत-सी मुसीबतें झेलकर आखिर स्वदेश पहुँचा हूँ।" उसने अपने लड़के को अपनी सारी कहानी सुनाकर पूछा-"यह बताओ, हमारे घर कितने दुष्ट हैं? हम उनको मार डालेंगे।"

"सब मिलकर एक सौ आठ आदमी हैं। इनके अलावा छः नौकर हैं। इन

सबको हम दोनों कैसे मार सकते हैं?" धीरनति ने पूछा।

"पागल, तुम सोच रहे हो कि हम दोनों ही हैं। हमारे साथ बुद्धिमती की सहायता भी तो है। इसलिए सवेरा होने से पहले तुम घर पहुँचो। मैं भिखारी का वेष धारण कर अपने सूअरों के रखवाले के साथ वहाँ आऊँगा। वे दुष्ट चाहे मेरा कितना ही अपमान करें, तुम सह लेना। किन्तु मुझ पर नज़र रखना। जब मैं इशारा करूँ तब तू दीवारों पर लटकी तलवार, कटारें लेकर उपरली मञ्जिल पर एक कोने में छुपा देना, अगर उनमें से कोई पूछे कि हथियार कहाँ हैं तो विनयपूर्वक कहना कि उनपर जङ्ग चढ़ गई थी इसलिए उनको रख दिया है। परन्तु हम दोनों के लिए आवश्यक शस्त्र दो भाले, दो तलवार, दो ढालें, ऐसी जगह रखना जहाँ हम आसानी से पहुँच सकें। तुम अधिक पी-पाकर किसी से झगड़ा न मोल लेना। समझे? नहीं तो हमारा काम बिगड़ जायेगा। यह किसी को न मालूम हो कि मैं वापस आ गया हूँ। अपनी माँ से भी न कहना। अभी हम दोनों के



सिवाय किसी को यह बात नहीं मालूम होनी चाहिए।" रूपधर ने अपने लड़के से कहा।

इस बीच, धीरमति जिस नौका में पैलास गया था वह नगर पहुँच गई। इस नौका के चलानेवालों में एक रूपधर के घर आया। वह और सूअरों का रखवाला एक साथ ही वहाँ पहुँचे। यह जानकर कि वह पद्ममुखी से धीरमति के वापस आने की बात बताने आया था वहाँ धरना दिये हुये दुष्ट, जो धीरमति को रास्ते में मारने गये थे, वे भी चले आये।

उन सबने मिलकर एक गुप्त सभा की। तब दुर्बुद्धि ने यों कहा।

"इस बार यह जिन्दा निकल गया है। किन्तु यदि यह जल्दी न मारा गया तो हम पर आफत आयेगी। पहले ही जनता हमारा विरोध कर रही है। यह आकर सबसे कह देगा कि हमने उसे मारने की कोशिश की थी। तब लोग हमें देश से बाहर भगा देंगे। इसलिए धीरमति को शहर में प्रवेश करते समय हम मार देंगे और उसकी सम्पत्ति को आपस में बाँट लेंगे। जो हम में से पद्ममुखी से विवाह करेगा उसे रूपधर का घर मिलेगा। अगर हमने धीरमति को जीने दिया तो हम रूपधर के घर में न रह सकेंगे। हर किसी को अपने घर रहकर शादी के लिए प्रयत्न करना होगा। बताओ क्या किया जाये।"

कई ने धीरमति की हत्या पर आपत्ति उठाई। "हमें यह बिना जाने कि धीरमति के भाग्य में मरना बदा है कि नहीं, कुछ नहीं करना चाहिये। अगर देवता यह बतायें कि उसकी मृत्यु निश्चित है तो में ही उसकी मृत्यु स्वयं करूँगा। तब तक हमें जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।" उनमें से एक ने कहा। सब को यह सलाह जँची। वे घर वापस चले गये।

उस दिन शाम को सूअरों का रखवाला जब अपनी झोंपड़ी वापिस पहुँचा तो बुद्धिनती देवी ने रूपधर का आकार इस तरह बदल दिया था कि वह पहचान न पाया। रात को, भोजन के बाद धीरमति पिता के साथ सूअरों के रखवाले के झोंपड़े में ही सोया।

(अभी और है)



गौ का भाव - ताव

एक किसान के पास एक मारनेवाली गौ थी। थोड़े दिनों बाद उसने दूध देना बन्द कर दिया। इसलिए किसान उसे बेचने हाट ले गया।

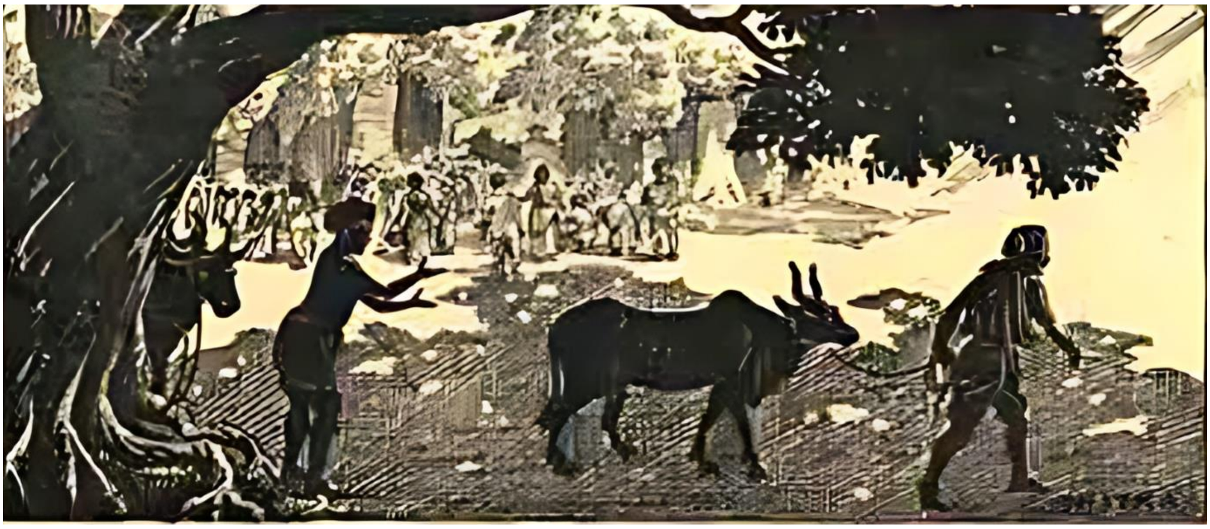
कई ने आकर गौ के लिए भाव-ताव किया। पर किसान उनसे कहता जाता- "यह गौ! यह तो सूख गई है। बूँद भर दूध नहीं देती, फिर ऊपर से मारती है।" इसलिए उसे किसी ने न खरीदा।

यह देख एक पशुओं के व्यापारी ने कहा-"तुझे गौ बेचना बिल्कुल नहीं आता। मुझे दे, मैं एक मिनट में बेच दूँगा।"

"और मुझे क्या चाहिये?" किसान ने गौ, व्यापारी को सौंप दी।

तुरन्त व्यापारी चिल्लाने लगा-"अच्छा मौका है। बड़ी सीधी गौ है। एक समय में तीन सेर दूध देती है। जो चाहते हैं जल्दी करें। फिर मौका न मिलेगा।"

"अरे, एक समय में तीन सेर दूध? ऐसी अच्छी गौ को मैं भला क्यों बेचूँगा?" कहकर किसान ने व्यापारी से गौ ले ली, और जल्दी जल्दी घर चला गया।





कृष्णा नदी के किनारे एक गाँव में सौभाग्यवती नाम की एक बुढ़िया रहा करती थी। उसकी उम्र अस्सी वर्ष की थी। उसके दोनों लड़के छोटी उम्र में ही गुज़र गये थे। लड़कियाँ अपनी ससुराल जा चुकी थीं। उसने कई पोतियों को भी गोदी में उठाया था। पर उसका पोता एक ही था। उसका नाम था गोपीचन्द। वह कहा करती थी-"मैं इसे पाल पोस कर बड़ा करने के लिए ही जी रही हूँ।"

गोपीचन्द बड़ा होने पर खूबसूरत निकला। वह खूबसूरत ही नहीं, डील डौल भी था। वह अच्छे स्वभाव का था।

उसकी सारी सम्पत्ति केवल एक बैल गाड़ी थी। वह गाड़ी भाड़े पर चलाता और जो कुछ पैसा मिलता, उससे अपना अपनी बहनों का और दादी का गुज़ारा करता। जब खेती का समय न होता तब भी उसकी गाड़ी को काम मिलता रहता। वह गाँव कुम्हारों के लिए प्रसिद्ध था। उनके बनाये हुये घड़े, सुराई, कसोरे आदि, शहर पहुँचाने के लिए गोपीचन्द की गाड़ी का उपयोग होता। गोपीचन्द के घर में दीवार के सहारे एक थैली लटकी रहती थी। उसकी दादी कहा करती कि वह भगवान की थाली थी। वह सब कष्टों का निवारण करती थी, उसे हाथ से छूना भी नहीं चाहिये; वह उसके ससुराल में आने से पहले ही उस घर में चली आई थी। आदि।

गोपीचन्द अभी अट्ठारह वर्ष का ही था कि उसकी दादी को पक्षपात हो गया। उसने पोते को पास बुलाकर कहा-"बेटा, भगवान की थाली के बारे में

सावधान रहना। वचन दो कि उसके पास तक न जाओगे।" गोपीचन्द ने उसकी इच्छानुसार वचन दिया।

"जब तक भगवान की अनुमति न हो, उसे न बेचना, घर से बाहर न जाने देना।" गोपीचन्द जवाब भी न दे पाया था कि बुढ़िया इस संसार से चली गई।

रात भर गोपीचन्द अपनी दादी के शोक में रोता रहा। उसके सिवाय वह किसी और माता को न जानता था। सम्पन्न लोग ही मृत सम्बन्धियों के लिए बहुत दिनों तक रो धो सकते हैं, बिचारे गरीबों के लिए यह कैसे सम्भव है? गोपीचन्द अगले दिन फिर गाड़ी लेकर निकला क्योंकि जिस दिन वह न कमाता उस दिन चारों को उपवास करना पड़ता। दादी के मर जाने के बाद उसके लिए यह विशाल संसार सिकुड़-सा गया। घर वापस आता तो गाड़ी खोलकर एक कोने में लेट जाता और अपने कुत्ते को पुचकारता, दादी के लिए रोता।

दादी के मर जाने के बाद घर का काम लड़कियों के हाथ में चला



गया। उनको रोकने के लिए दादी तो थी नहीं, इसलिये वे घर के काम में लापरवाही दिखाने लगीं। आलतू फालतू गहने खरीद कर खुशियाँ मनाने लगीं।

"गोपीचन्द, तुम तो अब सयाने हो गये हो, किसी कामकाजी लड़की से शादी करके घर बसा लो, तुम्हारी बहनें छोटी हैं, वे घरबार न देख सकेंगी।" गोपीचन्द को अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने सलाह दी।

"पहले बहनों की शादी होने दीजिये। अभी मेरी शादी के बारे में क्या जल्दी है?" गोपीचन्द कहा करता।

पर सच यह था कि गोपीचन्द ने अपने लिये लड़की पहले ही चुन रखी थी। पर उसके साथ विवाह होना असम्भव-सा था। वह कुम्हारों के मुखिया शिवलाल की लड़की पार्वती थी।

शिवलाल के लिए गोपीचन्द प्रायः गाड़ी ले जाया करता। इसलिये उसकी पार्वती से अच्छी जान पहचान हो गई थी। उन दोनों में बातचीत तो न होती थी; पर जब कभी गोपीचन्द दिखाई देता तो पार्वती मुस्कराती, बातचीत करने की इच्छा भी दर्शाती। गोपीचन्द ही दूर दूर रहता, क्योंकि वह सोचा करता था कि वह गरीब था।

यकायक गोपीचन्द की हालत और भी बिगड़ गई। उसका एक बैल मर गया, दूसरे का पैर टूट गया, गोपीचन्द को ऐसा लगा जैसे उसकी दोनों टाँगें ही टूट गई हों। गाँववालों ने थोड़ी बहुत मदद तो ज़रूर की। पर जो उसे अपने पैरों पर खड़ा कर सकते थे, वे देखते रहे। कुम्हारों के मुखिया शिवलाल ने भी सहायता न की। यह नौबत आई कि घर में चूल्हा भी न जलता।



एक दिन गोपीचन्द घर में बैठा था। उसे कुछ सूझ न रहा था कि क्या करे। तब एक व्यापारी ने आकर उससे कहा-"भाई, सुनता हूँ कि तुम्हारे घर में कोई पुरानी थैली है। क्या मैं उसे देख सकता हूँ?"

गोपीचन्द ने दीवार पर लटकी थैली को दिखाया। जब व्यापारी ने उस थैली को लेना चाहा तो गोपीचन्द ने कहा-"उसे मत छुओ।"

व्यापारी ने आश्चर्य से पूछा-"यह क्या कहा? मैं तो उसे पाँच रुपये देकर खरीदने के लिए आया हूँ।"

"वह बेचने के लिए नहीं है।" गोपीचन्द ने कहा।

"दीवार पर लटकाये रखने से क्या फायदा? चलो, दस रुपये दूँगा। नुक्सान भी हो गया तो कोई बात नहीं।" व्यापारी ने कहा।

गोपीचन्द न माना। व्यापारी ने भी न छोड़ा। पचास रुपये तक देने के लिए कहा। गोपीचन्द को रोमाञ्च-सा हुआ। वह उस धन से एक और बैल खरीद सकता था और फिर गाड़ी चला सकता था। फिर भी दादी की बात याद करके





उसने थाली बेचने से इनकार कर दिया। गोपीचन्द के घर में रखी वह थाली काकतीय काल की थी। वह बढ़िया सोने की थी। जब काकतीयों की राजधानी बोरङ्गल को मुसलमानों ने घेर लिया, तब यह गोपीचन्द के पूर्वजों के हाथ आई। उसे उन्होंने काकतीयों की सम्पत्ति समझकर बड़े भक्तिभाव से सुरक्षित रखा।

यह बात उड़ती उड़ती शहर भी पहुँची। यह सुनकर ही एक व्यापारी गोपीचन्द से भावताव करने के लिए आया था। पर गोपीचन्द बेचने के लिए राजी न हुआ।

उस व्यापारी के चले जाने के बाद कई और व्यापारी उसे खरीदने के लिए आये। गोपीचन्द दूसरों की गाड़ी किराये पर लेकर चलाता, कभी कुछ मिलता तो कभी कुछ भी न मिलता। एक वक्त खाता तो दो वक्त खाली पेट पड़ा रहता। पर उसने थाली न बेची।

इस बीच उसे प्राय: पार्वती रोज़ दिखाई देती। गोपीचन्द का पालतू कुत्ता भी उससे हिलमिल गया। जब कभी वह दिखाई देती तो वह दुम हिलाने लगता। पार्वती भी उसे प्रेम से देखती।

लोग गाँव में कहने लगे कि पार्वती के विवाह की बातचीत किसी बड़े घर में हो रही थी। यह सुनते ही गोपीचन्द का रहा सहा उत्साह भी जाता रहा। उसने अपने मन को समझाया-"जब मेरी पार्वती से शादी नहीं हो रही है तब चाहे किसी से भी हो, तो मुझे क्या?" क्योंकि गोपीचन्द की हालत ऐसी थी कि वह दिन रात मेहनत करता; पर तब भी न खुद पेट भर खा पाता, न बहनों को ही खिला पाता। और शिवलाल इतना सम्पन्न था कि उसकी पाँचों

अंगुलियाँ घी में थीं। यह भी सुना जाता था कि वह शहर के व्यापारियों को भी सूद पर रुपया दिया करता था।

उस साल फसल अच्छी रही। खेतों में सुनहरा धान लहलहा रहा था। परन्तु गोपी के घर में गरीबी धरना दिये हुये थी। दादी की मृत्यु के बाद घर में शनि का वास सा हो गया था। उसकी एक बहन बीमार पड़ गई। गोपीचन्द को घर का कामकाज भी देखना पड़ा। "इन कष्टों को भगवान की थाली ने क्यों नहीं हटाया?" गोपी सोचने लगा।

एक दिन शिवलाल ने गोपीचन्द को गाड़ी जोतकर लाने के लिए कहा। उस दिन उसे बहुत से पात्र शहर पहुँचाने थे। उस काम के साथ एक और काम भी मिल गया। शिवलाल ने गोपीचन्द को रुपयों की एक थैली देते हुए कहा-"इस पैसे को फलाने व्यापारी को देकर रसीद ले आना। तुम पर मुझे भरोसा है, इसलिए तुम्हें यह काम सौंप रहा हूँ।"

यह जानकर कि शिवलाल को उस पर इतना भरोसा था गोपीचन्द को



बड़ी खुशी हुई। वह गाड़ी में पात्र भरकर कुत्ते को लेकर शहर के लिए निकल पड़ा। पात्र देकर जब वह व्यापारी के पास पहुँचा तो दुपहर हो गई। गोपीचन्द ने गाड़ी खोल दी और कुत्ते को वहाँ रखवाली करने के लिए छोड़ वह व्यापारी के घर में गया। व्यापारी ने रुपया ले तो लिया पर रसीद देने में कुछ देरी हो गई।

गोपीचन्द ने बाहर आकर देखा तो न वहाँ कुत्ता था, न बैल न गाड़ी ही। "गली में कुत्तों को पकड़कर ले जाते हैं इस शहर में, तुम नहीं जानते " गली में लोगों ने उससे पूछा।

गोपीचन्द पर बिजली गिर गई। "मेरी गाड़ी और बैल कहाँ हैं?" उसने पूछा।

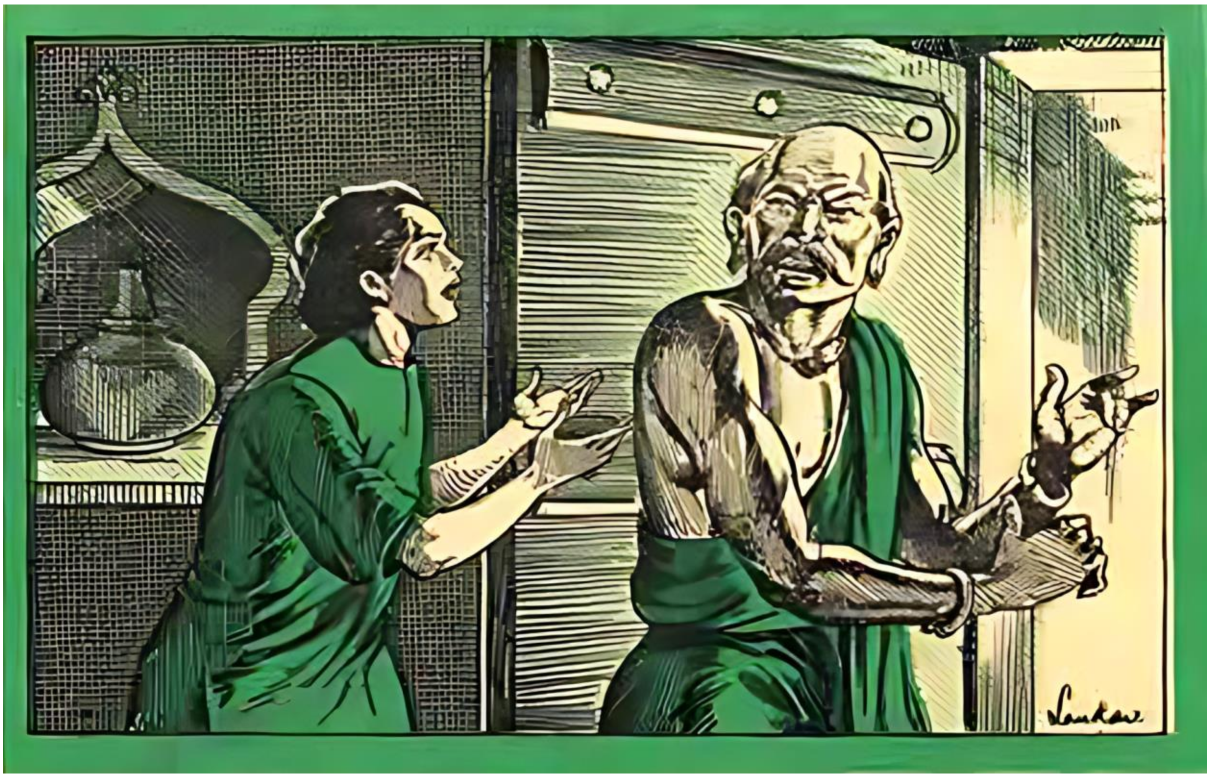
"अभी अभी कोई पकड़कर ले गया।" गली के लोगों ने बताया।

गोपीचन्द को गाड़ी और बैल खोने की अपेक्षा कुत्ते के जाने का अधिक दुःख रहा। यह जानकर कि उसे कहाँ ले गये थे, वह उसे लेने के लिए दौड़ा। वहाँ उसने लोगों से मिन्नतें करके कुत्ता छोड़ देने के लिए कहा।

"यह तेरा कुत्ता है? पाँच रुपये देकर छुड़वा ले जाओ।" कुत्ते को छुड़ाने के लिए दो रुपये और चूँकि उसने पकड़नेवाले को काटा था इसलिए तीन रुपये जुरमाना।" वहाँ के आदमियों ने कहा।

गरमी की दुपहरी में सिर जल रहा था। गोपीचन्द ने सवेरे से पानी तक न पिया था। फिर भी वह अपने गाँव भागकर शिवलाल के पास गया। "बाबू, आप ही मुझे बचा सकते हैं।" वह उसके सामने रोया धोया।

शिवलाल ने यह सोचकर कि गोपीचन्द ने रुपयों की थैली फेंक दी होगी, उसे डाँटना डपटना शुरु किया। पर जब



गोपीचन्द ने रसीद दिखाई तो उसका मन शान्त हुआ।

"बाबू! मेरे कुत्ते को पकड़ लिया है। पाँच रुपये दिलवाइये, शाम तक अगर मैंने रुपये न दिये तो बिचारा कुत्ता भूखा मर जायेगा, आपका कर्ज किसी न किसी तरह चुका लूँगा।" गोपीचन्द के यह कहते कहते आँखों में आसू छलक आये।

"तेरे कुत्ते पर पाँच रुपये फेंकने के लिए मेरे पास नहीं है। अगर वह कुत्ता गया तो जाने दो, एक और पाल लेना।"

गोपीचन्द डगमगाता आया, उसका भगवान पर भरोसा जाता रहा। उसे यकायक भगवान की थाली पर ख्याल आया। दादी ने कहा था कि अगर भगवान की अनुमति हो तो उस थाली को बेचा जा सकता था। भगवान जरूर अनुमति देंगे। अगर ऐसे समय पर यह थाली काम में न आई तो यह किस काम की? उसे भगवान पर फिर विश्वास होने लगा।

उसका घर जाना, दीवार से थैली का उतारना, उसे लेकर फिर शहर में जाना, वहाँ व्यापारी के पास जाकर कहना-



"यह लो भगवान की थाली, पचास रुपये दो।" ये सब उसे सपने से लग रहे थे। उसे बेहोशी-सी आ रही थी।

उसके हाथ से व्यापारी के थाली लेने पर वहाँ खड़े एक और सम्भ्रान्त व्यक्ति ने उसे लेकर कहा-"इसका दाम पचास रुपये ही! इसका दाम तो और भी अधिक होगा।

"पचास रुपये काफी हैं। दीजिये।" उस आदमी ने पचास रुपये दे दिये। गोपीचन्द लड़खड़ा गया। पाँच रुपये देकर उसने कुत्ते को छुड़ा लिया। वह कुत्ते को दुलार पुचकार ही रहा था कि वह बेहोश हो गया।

जब फिर उसे होश आया तो वह अपने घर में था। थोड़ी देर बाद, वह सम्भ्रान्त व्यक्ति उसके पास थाली लेकर आया। उसने गोपीचन्द से पूछा-"क्यों भाई! यह थाली तुमने किसी जरूरत को पूरी करने के लिए ही बेची है न?"

"जी हाँ।", गोपीचन्द ने कहा।

"क्या तुम जानते हो इसका क्या दाम है?" उस भद्र पुरुष ने पूछा ।

"मुझे कुछ नहीं मालूम।" गोपीचन्द ने कहा।

"यह थाली इतिहास में प्रसिद्ध है। इसका दाम कम से कम पन्द्रह सौ रुपये होगा। यह लो बाकी रुपये।" यह कह कर भद्र पुरुष ने रुपयों की थैली दी।

उस दिन से गोपीचन्द का भाग्य फिरा। वह उस गाँव में धनी हो गया।

उसने जमीन खरीद ली। घर भी बनवा लिया। जब पार्वती ने अपने पिता से कहा कि वह सिवाय गोपीचन्द के किसी और से शादी नहीं करेगी तो उसने भी कोई आपत्ति न की। विवाह के अवसर पर दोनों का जलूस निकाला गया तो कुत्ता भी शान से उनके साथ चला।





रूपधर की यात्राएँ